भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8, **नवम्बर** 2007 | **पुरुषोत्तमदास मोदी श्रद्धांजलि अंक** | **अंक** 11

अश्रु-तर्पण

'**भा**रतीय वाङ्मय' के प्रवर्तक, संरक्षक और प्रधान सम्पादक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के सहसा देहावसान से हम सभी शोकाकुल हैं। प्रकाशन और साहित्य के क्षेत्रों में उन्होंने जीवनपर्यन्त जो अबाधित सेवा की, वह धरोहर के रूप में याद की जाएगी। राष्ट्रहित की चेतना से सदा सजग रहकर विकासशील भारत के लिए शिक्षा के महत्त्व पर वे अत्यधिक बल देते रहे हैं। मर्यादा का उल्लंघन उन्हें असह्य था। वर्तमान शिक्षा-नीति भारतीय संस्कार की अवहेलना न करे, ऐसी उनकी सुचिन्तित सोच थी। कार्यकुशल समाजसेवक के रूप में उनकी सेवाओं की सराहना होती रही है। उनकी दैहिक अनुपस्थिति में उनके विचारों से अनुप्राणित होकर हम अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करते रहेंगे। यही हमारा संकल्प है। 'भारतीय वाङ्मय' पूर्ववत अपनी विचार-प्रखरता से अपने सुधी पाठकों की सेवा करता रहेगा। प्रस्तुत अंक श्री मोदीजी के प्रति श्रद्धा निवेदित करने के लिए श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रकाशित हो रहा है। हमारा इरादा इसे अधिकाधिक पठनीय सामग्री से भरपूर बनाने का है, जैसा हमारे प्रधान सम्पादक मोदीजी अथक परिश्रम से किया करते थे। हिन्दीभाषी ही नहीं अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में भी 'भारतीय वाङ्मय' ने अपने को कंठहार बना लिया है। दक्षिण भारत के अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दीभाषी विद्वानों ने इससे नाता जोड़ लिया है। परिणामस्वरूप 'भारतीय वाङ्मय' मोदीजी के प्रयास से उत्तर-दक्षिण का संस्कारिक सेतु बन गया है। उनके देहावसान पर दूर-दूर से जो समवेदनासूचक पत्र आ रहे हैं, उनका समावेश प्रस्तुत श्रद्धाञ्जलि-अंक में किया गया है। हम मोदीजी के निर्देशित रास्ते पर चलकर राष्ट्रीय बोध के लिए काम करते रहेंगे। उनके शुभ चिन्तकों ने जो लेख भेजे हैं, उनको इस अंक में दे रहे हैं। आशा ही नहीं मुझे विश्वास है कि कृपालु पाठक अपने शुभ विचारों से हमें प्रेरित करते रहेंगे। **—सम्पादक**

मोदीजी के अभाव की पूर्ति सम्भव नहीं

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

[गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कृतकार्य आचार्य एवं अध्यक्ष डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने जब अपने पुत्र प्रेमव्रतजी से पुरुषोत्तमदास मोदी के देहावसान का समाचार सुना तब सहसा मौन हो गए। कुछ क्षण बाद उन्होंने कहा कि मैं इसके लिए कत्तई तैयार नहीं था।]

मोदीजी से मेरा परिचय सन् 1952 ई० में हुआ था। उसी वर्ष मैं गोरखपुर के महाराणा प्रताप महाविद्यालय में प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुआ था। उस समय मोदीजी बैंक रोड पर पुस्तकों की छोटी-सी दुकान करते थे। उसके बाद आप नखास, चौक पर अपनी दुकान ले आए। वह उनका अपना मकान था। मोदीजी बहुत परिश्रमी और सूझ-बूझवाले व्यक्ति थे। सन् 1957 में गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। आपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की आपूर्ति करनी शुरू की। उस क्रम में आपका परिचय डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय से हुआ। वह परिचय दिन-दिन प्रगाढ़ होता गया। इसका लाभ भी मोदीजी को प्राप्त हुआ।

सन् 1953 ई० में आपने मेरी पहली किताब 'रीतिकालीन कविता और सेनापति' प्रकाशित की। इस पर लखनऊ की हिन्दी-समिति ने चार सौ रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। 1955 ई० में आपने मेरी दूसरी पुस्तक 'हिन्दी का गद्य साहित्य' प्रकाशित किया। इस पर पाँच सौ रुपये का पुरस्कार मिला। फिर तो मोदीजी ने क्रमशः 'आनन्दप्रकाश दीक्षित', 'लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय', 'डॉ० भगीरथ मिश्र' आदि अनेक विद्वानों की कृतियाँ प्रकाशित कीं। आपकी गणना अच्छे प्रकाशकों में होने लगी। प्रकाशन की

शेष पृष्ठ 2 पर

जीवन की झांकी

जन्म : 19 अगस्त 1928, गोरखपुर
शिक्षा : एम०ए० (हिन्दी), सन् 1950 ई०
पूर्व मंत्री : बधिर और अन्ध विद्यालय, वाराणसी
पूर्व सदस्य : गोरखपुर विश्वविद्यालय फाउण्डेशन सोसायटी
सदस्य : गोरखपुर विश्वविद्यालय कोर्ट
मंत्री : अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, नई दिल्ली
सम्पादक : हिन्दी 'प्रकाशक', 'भारतीय वाङ्मय', 'मुमुक्षु'
मंत्री तथा उपाध्यक्ष : श्री मारवाड़ी युवक संघ, वाराणसी
संयुक्त मंत्री : श्री राम लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल, वाराणसी
अध्यक्ष और मंत्री : श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला (ट्रस्ट बोर्ड), वाराणसी
उपाध्यक्ष : श्री काशी मुमुक्षु भवन सभा, वाराणसी और कोलकाता
संयुक्त मंत्री : हिन्दू सेवा सदन अस्पताल, वाराणसी
चेयरमैन : वाराणसी इलेक्ट्रिक कलर प्रिंटर्स प्रा०लि०, वाराणसी
उपाध्यक्ष : जयशंकर प्रसाद स्मृति वातायन
पूर्व परामर्शदाता : भाषा संस्थान, शिक्षा विभाग, उ०प्र० सरकार, लखनऊ
पूर्व परामर्शदाता : उ०प्र० हिन्दी संस्थान
देहावसान : 7 अक्टूबर 2007, वाराणसी

शब्दांजलि

क्रूर काल ने
नव प्रकाश के माथे की
एक बिन्दी धो दी
रचनाओं ने
पुस्तक बनने की
संचित अभिलाषा खो दी,
बिलख-बिलख कर पूछ रही हैं
गायघाट की चंचल लहरें—
'कहाँ रूठ कर चले गये
पुरुषोत्तम मोदी?'

—गिरिधर करुण, देवरिया (उ०प्र०)

(पृष्ठ 1 का शेषांश)

सुविधा के लिए आप वाराणसी चले गए। देखते-देखते आप अखिल भारतीय ख्याति के 'प्रकाशक' और 'पुस्तक विक्रेता' हो गए। वे हमारे प्रकाशक ही नहीं थे, हमारा उनका सम्बन्ध पारिवारिक हो गया था जो आज तक बना हुआ है।

मोदीजी 'पत्रकार' और 'रचनाकार' भी थे। व्यापारिक वातावरण में आपके ये दोनों रूप दब गए। पत्रकार का रूप अवश्य जीवित रहा। आज मोदीजी नहीं हैं। 1952 से सन् 2007 तक का साथ कम नहीं होता। मुझे लगता है, जैसे मेरी एक 'भुजा' कट गई। मोदीजी का अभाव, ऐसा अभाव है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। उनका परिवार अब भी मेरा परिवार है। मेरा विश्वास है, मोदीजी की यश: काया सदैव अमर रहेगी।

[7 अक्टूबर 2007 को डॉ० रामचन्द्र तिवारी को जब मोदीजी के दिवंगत होने की खबर मिली तब उन्होंने मोदीजी के दोनों पुत्रों (अनुराग और पराग) को निम्नलिखित पत्र भेजा।]

आज (7 अक्टूबर) सबेरे करीब साढ़े आठ बजे प्रेमव्रत (अपने छोटे पुत्र) ने बंधुवर मोदीजी के दिवंगत होने का समाचार दिया। मैं इसके लिए कत्तई तैयार न था। उन्होंने बताया कि 'हार्ट अटैक' हुआ था।

मेरा उनका सम्बन्ध सन् 1952 ई० से था। मैं महाराणाप्रताप डिग्री कालेज में प्रवक्ता के रूप में आया था। उर्मिलाजी (मोदीजी की पत्नी) सेण्ट एण्ड्रयूज़ कालेज से एम०ए० कर रही थीं। उन्होंने मेरा कोई वक्तव्य सुना था, मोदीजी से प्रशंसा की थी। उन दिनों मैं दीवान दयाराम मुहल्ले में उपाध्यायजी के मकान में रहता था। श्री आनन्दप्रकाश दीक्षित सेण्ट एण्ड्रयूज़ में प्रवक्ता थे। उस समय मोदीजी ने बैंक रोड पर एक छोटी सी दुकान (किताबों की) खोल रखी थी। बाद में वह दुकान नखास ले आए। दुकान चली और खूब चली। उसके बाद उन्होंने प्रकाशन शुरू कर दिया। प्रकाशन की सुविधा के लिए वे काशी चले गए और फिर तो वहीं के होकर रह गए। आज, तुम लोग जिस ऊँचाई पर हो, वहाँ तक पहुँचने में मोदीजी का श्रम, प्रतिभा और सूझ-बूझ का बहुत बड़ा योगदान है।

मैं लगभग 84 वर्ष का हो रहा हूँ। कब क्या हो जाय, ठीक नहीं। मेरा एक ही आग्रह (निवेदन) या अनुरोध है कि उन्होंने जो परम्परा कायम की है, उसका निर्वाह करना। 'उर्मिलाजी' का ध्यान रखना। मोदीजी का उन्होंने बराबर साथ दिया है। बेहतर यह कहना होगा कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व को मिटाकर मोदीजी का साथ निभाया है।

मैं स्वयं फोन पर बात करना चाहता था, किन्तु एक तो मुझे सुनाई नहीं देता, दूसरे इतना सब फोन पर कह भी नहीं पाता।

शुभचिन्तक : **रामचन्द्र तिवारी**

मणिकर्णिका घाट पर अन्तिम संस्कार

लब्धप्रतिष्ठित प्रकाशक और साहित्यकार पुरुषोत्तमदास मोदी का रविवार (7 अक्टूबर) की भोर में देहान्त हो गया। वह 80 वर्ष के थे। उनकी अंत्येष्टि रविवार को अपराह्न मणिकर्णिका घाट पर हुई। मुखाग्नि उनके ज्येष्ठ पुत्र अनुराग मोदी ने दी। अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में शहर के बुद्धिजीवी मौजूद थे।

6 अक्टूबर को रात करीब 12 बजे सीने में दर्द उठने के बाद परिवारवाले उन्हें पहले हेरिटेज अस्पताल ले गये, लेकिन वहाँ आईसीयू खाली नहीं था। फिर बीएचयू ले जाया गया किन्तु वहाँ भी आईसीयू में जगह नहीं थी। इसके बाद उन्हें आशापुर स्थित मेरिडियन हास्पिटल में भर्ती किया गया। लेकिन अथक प्रयास के बावजूद चिकित्सक उन्हें नहीं बचा सके।

शनिवार को चौकस्थित प्रतिष्ठान 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' में देर शाम 7.30 बजे तक बैठे रहे। उनके ज्येष्ठ पुत्र अनुराग मोदी बताते हैं कि 7 बजे के बाद उन्हें जबरन घर भेजना पड़ता था। इस पर वे नाराज भी हो जाते थे।

मोदीजी का जन्म 19 अगस्त 1928 को गोरखपुर में हुआ था। 1950 में उन्होंने वहीं से हिन्दी में एम०ए० किया। 1957 में गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के समय गठित यूनिवर्सिटी कोर्ट के सदस्य चुने गए। वह गोरखपुर यूनिवर्सिटी फाउण्डेशन सोसाइटी के सदस्य भी थे। माखनलाल चतुर्वेदी के साथ पत्रकारिता करने वाले मोदीजी का साहित्य के प्रति भावात्मक लगाव था।

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन उन्होंने गोरखपुर में ही शुरू कर दिया था। 1964 में स्थाई रूप से काशी आए। 1969 में चौक के विशालाक्षी भवन में 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' स्थापित किया। प्रख्यात लेखिका शिवानी का पहला उपन्यास 'चौदह फेरे' यहीं से प्रकाशित हुआ।

गुणग्राही लोकप्रिय आदर्श व्यक्ति थे मोदीजी

■ पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

संभ्रान्त व्यापारी-परिवार में 19 अगस्त 1928 ई० को जन्मे पुरुषोत्तमदास मोदी अपनी प्रतिभा, कार्यकुशलता, अदम्य उत्साह और अथक परिश्रम के कारण हिन्दी-साहित्य-जगत् में अपना अलग स्थान बना चुके थे। वे केवल पुस्तक-प्रकाशक न होकर विविध कार्यकलापों से भी सम्बद्ध रहे। वे कुशल पत्रकार या सम्पादक ही नहीं थे, अपितु चिन्तक, समीक्षक, साहित्यकार, अर्थशास्त्री, समाजसेवी, परोपकारी, साहित्यप्रेमी, गुणग्राही और लोकप्रिय आदर्श व्यक्ति थे। उनका लक्ष्य था—''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'' अर्थात् शुभ विचार सब ओर से आवें। इसके लिए वे सदा खुले मन से यशस्वी साहित्यकारों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, वैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों के सम्पर्क में रहते थे। वे यशस्वी लेखकों और कवियों के ग्रन्थों को प्रकाशित करते थे और उदीयमान लेखकों को ग्रन्थ-लेखन के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। उन्होंने अनेक लेखक तैयार किए और उनकी कृतियों को प्रकाशित किया।

वे संकीर्णता के विरोधी थे। जाति, धर्म, भाषा या संस्कृति के संकीर्ण विचारों से दूर रहते थे। उनकी दृष्टि में मानवहित और विश्वहित सर्वोपरि था। वे पूर्वाग्रह से युक्त होकर कोई काम नहीं करते थे। उन्होंने सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं। डॉ० भगीरथ मिश्र, पं० गोपीनाथ कविराज, पं० बलदेव उपाध्याय, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', श्री कल्याणमल लोढ़ा आदि के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ आपके संस्थान 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' से ही प्रकाशित हुए हैं। पं० माखनलाल चतुर्वेदी से बचपन से ही निकट सम्बन्ध ने मोदीजी को पत्रकारिता के अनेक गुर सिखाए। ये गुर 'भारतीय वाङ्मय' के सम्बन्ध में काम आए। 'भारतीय वाङ्मय' सामान्य मासिक पत्रिका न रहकर साहित्यिक पत्रिका हो गयी है। नवीनतम सूचनाओं और विविधताओं के कारण यह प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में गिनी जाने लगी है। इसका प्रचारक्षेत्र उत्तर भारत न रहकर यह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र की पत्रिका मानी जाती है।

मैं 1950 में संस्कृत विभागाध्यक्ष होकर सेंट एण्ड्रयूज कालेज, गोरखपुर में कार्यरत हुआ। मोदीजी सन् 1950 से गोरखपुर में पुस्तक-व्यवसाय में प्रवृत्त हुए। उन्होंने एक दिन प्रार्थना की कि संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के उपयुक्त एक ग्रन्थ तैयार करके दीजिए। उनके इस आग्रह पर मैंने कठोर परिश्रम से 'रचनानुवादकौमुदी' प्रकाशनार्थ दी। यह पुस्तक आगे तीन भागों में प्रकाशित हुई। अपनी कतिपय विशेषताओं के कारण यह ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और इन तीनों की लाखों प्रतियाँ अब तक बिक चुकी हैं। यह ग्रन्थ प्रकाशक और लेखक के लिए कामधेनु सिद्ध हुआ। मेरा सन् 1950 से अब तक मोदीजी के परिवार से पारिवारिक सम्बन्ध बना हुआ है। दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी रहे हैं।

मोदीजी पुस्तक-प्रकाशन के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों से सदा जुड़े रहे। वे 1964 में स्थायी रूप से काशी पहुँचे। वे वहाँ काशी गोशाला, मारवाड़ी युवक संघ, मारवाड़ी अस्पताल और काशी मुमुक्षु भवन आदि से सम्बद्ध रहे। वे कई पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक रहे। 1996 में वे पक्षाघात से पीड़ित हुए। रोगग्रस्त होते हुए भी वे प्रतिदिन 8-10 घंटा कार्य करते रहे। अन्तिम समय तक वे नवीन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए चिन्तित रहे। 6 अक्टूबर 2007 की रात्रि में उनकी आकस्मिक निधन से साहित्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे।

श्रद्धांजलि के रूप में ये दो श्लोक अर्पित हैं—

पुरुषोत्तमदासोऽयं, लोके 'मोदी' ति विश्रुतः।
स्वीय-ज्ञान-प्रतापेन, सर्वेषाम् आदरास्पदः॥ 1॥
कला-संस्कृति-साहित्ये,
सेवयाऽद्भुत-कीर्तिभाक्।
दिवंगतोऽपि यो लोके, चकास्ति यशसा सदा॥ 2॥

पढ़ते-लिखते रहना ही हजार रोगों की दवा : मोदीजी अपने कार्यालय में जीवन के अन्तिम दिनों तक क्रियाशील रहे।

[मोदीजी के देहावसान का समाचार सुनते ही द्विवेदीजी ने मोदीजी के दोनों पुत्रों को समवेदना का निम्नलिखित पत्र भेजा]

हा पुरुषोत्तम मोदी

चि० अनुराग एवं पराग

स्वस्ति!

मुझे अभी यह जानकर हार्दिक शोक हुआ कि रात्रि में श्री मोदीजी का स्वर्गवास हो गया। यह महान विपत्ति है। मैं इस शोक से हतप्रभ हूँ। हमारा सारा परिवार इस दुखद समाचार से अत्यन्त शोकाकुल है। मैं इस समय आपकी कोई सेवा कर सकता तो उपकृत समझता। श्री मोदीजी कुशल व्यापारी ही नहीं थे, अपितु अनेक गुणों की खान थे। वे उच्चकोटि के विचारक, सुधारक, संपादन कला में पटु, निर्धनों, हीनों-दीनों के हितचिन्तक थे। उनकी सक्रियता और कार्यकुशलता अवर्णनीय थी। मैं 55 वर्षों से तुम्हारे परिवार से संबद्ध रहा हूँ। मेरे अपने घर की तरह दुःखद घटना है। इसे तुम धैर्य से सहना और अपने विवेक से काम करना। परमात्मा तुम्हारी सहायता करता रहेगा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को उच्च से उच्च शान्ति प्रदान करे और दुःखित एवं शोकाकुल परिवार को इस शोक को सहन करने की शक्ति दे।

—तुम्हारा हितैषी
कपिलदेव द्विवेदी

त्रुटि-संशोधन

'भारतीय वाङ्मय' के पिछले अक्टूबर अंक के पृष्ठ 7 पर स्मृति-शेष शीर्षक के अन्तर्गत डॉ० शुकदेव सिंह का परिचय छपा है। ऊपर की तीसरी पंक्ति में उनके देहान्त का दिनांक 21 अक्टूबर छपा है। वह **21 सितम्बर** होना चाहिए था। इसके लिए खेद है। **—सम्पादक**

काव्य-पुष्प

बारंबार प्रणाम

गौरवर्ण शुभ सुन्दर चेहरा वाणी मृदुल विनोदी।
प्रतिभा के थे धनी नाम था श्री पुरुषोत्तम मोदी॥
श्री पुरुषोत्तम मोदी खुद थे जो अनुपम विद्वान।
और प्रकाशक भी ऐसे सारे भारत में नाम॥
कहते रामअवतार अचानक छोड़े काशीधाम।
सरस्वती के वरद पुत्र को बारंबार प्रणाम॥

छोड़े यह संसार

जीवन के आखिरी क्षण तक किये निरन्तर काम।
वय लगभग अस्सी की थी आलस का कहीं न नाम॥
आलस का कहीं न नाम किये नित हिन्दी को समृद्ध।
स्वयं लिखे, लेखक, वक्ता थे, ज्ञाता और प्रसिद्ध॥
कहते राम अवतार ज्ञान का सदा भरे भण्डार।
और ज्ञान गंगा देकर तब छोड़े यह संसार॥

दिल के प्रिय इंसान

थे अनन्य प्रेमी पुस्तक के पुस्तक थी परिवार।
बीता सारा जीवन संग में होकर सदा बहार॥
होकर सदा बहार स्वयं भी पढ़े बढ़ाये ज्ञान।
पुस्तक का नित मान बढ़ाये और किये सम्मान॥
कहते राम अवतार रहे गोरे सुग्घर परिधान।
दिल के निर्मल नेक भले थे दिल के प्रिय इंसान॥

उससे इतना प्यार

अपने श्रम से बढ़े कीर्ति को भारत में फैलाये।
जाने कितनों को मोदीजी अपना स्वयं बनाये॥
अपना स्वयं बनाये ऐसा सुन्दर था व्यवहार।
पाकर जिनको धन्य हुआ था यह पुस्तक व्यवसाय॥
कहते राम अवतार भले ही पड़े कभी बीमार।
पर पुस्तक का साथ न छोड़े उससे इतना प्यार॥

करते पुनः प्रणाम

जाना तो सबको होता है उनको भी था जाना।
और जाने का उनके भी तो आया एक बहाना॥
आया एक बहाना लेकर चला स्वर्ग की ओर।
लगे ढूँढ़ने लोग यहाँ पर और मच गया शोर॥
कहते राम अवतार सभी लेकर श्रद्धा से नाम।
उनकी अब पावन स्मृति को करते पुनः प्रणाम॥

डॉ० रामअवतार पाण्डेय, दारानगर, वाराणसी

एक थे पुरुषोत्तमदास मोदी

■ डॉ० बच्चन सिंह

वाराणसी के चौक थाने की बगल में, दस कदम दाहिने, कुछ सीढ़ियाँ उतर जाने पर मिलेगा विश्वविद्यालय प्रकाशन। एक साफ-सुथरा, करीने से सजे रैक, रंग-बिरंगी पुस्तकें, व्यवस्थित दफ्तर। एक टेबुल के सामने एक बूढ़ा, रुग्ण, दुबला-पतला व्यक्ति सिर झुकाये कागज पर कलम गोदता, किताब या पत्रिकाओं में चश्मे के पीछे से कुछ ढूँढ़ता, निशान लगाता दिखाई पड़ेगा। हवा में घुली हुई मद्धिम खुशबू। ये हैं पुरुषोत्तम मोदी। पैरों की आहट मिली नहीं कि वे आगन्तुक को पहचान लेते हैं। सिर उठाकर सलाम-दुआ करते हैं। अब वह जगह रिक्त हो गयी है। दुआ-सलाम जारी रहेगा, लेकिन आवाज दूसरी होगी। एक आवाज रैक से निकलेगी, किताबों की दरार से। उनकी हमउम्र के लोग पहचान लेंगे। हवा में मृत्यु-गंध बनी रहेगी। जाते-जाते जायेगी।

गोरखपुर से अपने सिर पर प्रकाशन की छोटी-सी गठरी लादे वे बनारस आये। बनारस के पीछे एक सपना था। सपने के कारण बनारस इतना उनका अपना हो गया कि वे स्वयं सपना हो गये। उनका सपना रहेगा, वही उनकी धरोहर है। उनके वंशज, आशा है, उसे सम्भालकर रखेंगे। साहित्यकारों को वे बहुत सम्मान देते थे क्योंकि उनकी अभिरुचि साहित्यिक थी। यदि वे प्रकाशन के धंधे में न उतरे होते तो साहित्यकार होते। प्रसादसम्बन्धी उनकी संस्मरण-पुस्तक इसका प्रमाण है। वे मुमुक्षु भवन के पदाधिकारी थे। साहित्यकारों के दिवंगत होने पर वे मुमुक्षु भवन में उन पर गोष्ठी आयोजित किया करते थे। साहित्यिक श्रद्धांजलि-गोष्ठी के लिए कहने ही वाला था कि वे चले गये। कभी-कभार वे साहित्यिक गोष्ठियों में लद-फंदकर आते थे और कुछ देर बैठते थे। कहने पर अपना बयान भी दर्ज कराते थे। कई दृष्टियों से बनारस को संवारने में उनके मूल्यवान योगदान को आंका जाना चाहिए। उनकी अपनी पुस्तक की दुकान में विविध प्रकाशनों की पुस्तकें रहती थीं। यदि कभी कोई पुस्तक मँगाने पर नहीं मिली तो लज्जा का अनुभव करते थे। तुरन्त आर्डर देते थे। लम्बी बीमारी के कारण इसमें कुछ अव्यवस्था आ गयी थी। इधर बहुत दिनों से कार्यालय नहीं जाते थे। कुछ ही दिनों से आने लगे थे। मुझे इसका पता चला।

चार-पाँच दिन पहले एक दिन मैंने उनको फोन किया। मोदीजी, अच्छी खबर है कि आप दुकान आने लगे हैं। यदि अपना थ्री-ह्वीलर भेज दें तो आपसे मुलाकात हो जाय। आपको देखने का मन करता है। थ्री-ह्वीलर मेरे दरवाजे खड़ा था। रथयात्रा, गुरुबाग, लक्सा, गोदौलिया के जाम को पार करना उफानभरी कर्मनाशा को पार करना है। अपने घर से चौक पहुँचने में पैतालिस मिनट लग गए। चालक ने मुझे पकड़कर तहखाने में पहुँचाया। 'भारतीय वाङ्मय' पर थोड़ी बात चली, फिर डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह पर। धीरेन्द्रजी थे तो 'आज' के सम्पादकमण्डल में, पर उनका मन रमता था शोध-साहित्य में। मोदीजी के घर के पास रहते थे। वे सबेरे मोदीजी के यहाँ आ जाते थे। दोनों देर तक साहित्यिक चखौटियाँ करते एकान्त काटते थे। एक दिन भक से धीरेन्द्र हमेशा के लिए चले गये। मोदीजी को सांघातिक चोट पहुँची। उससे वे ऊबर नहीं पाए। मैंने कहा, ''मोदीजी, मैं तो महाभारत पढ़ता हूँ। उसका लुब्बा-लुआब है—कालः पचति भूतानि। लेकिन स्वास्थ्य को देखते हुए काम कम कर दीजिये।''

वे बोले—''मेरे अतिरिक्त 'भारतीय वाङ्मय' कौन निकालेगा? मुझे इसकी चिन्ता रहती है। अब कौन करेगा इसकी चिन्ता? कोई करेगा क्या?''

''मैं चल रहा हूँ। आपको ले जाने के लिए जल्दी ही थ्री-ह्वीलर लौटा दूँगा।'' उठते-उठते मेरे मुँह से निकल गया।

कैदे हयात व बंदे गम
असल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी
ग़म से नजात पाये क्यों।

डॉ० झारखण्डे चौबे का निधन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व प्राध्यापक डॉक्टर झारखण्डे चौबे का 18 अक्टूबर को वाराणसी में देहान्त हो गया। उनके निधन पर अनेक बुद्धिजीवियों ने गहरा दुःख व्यक्त किया। उनका जन्म वाराणसी जिले के व्यासपुर गाँव में 15 जुलाई 1939 को हुआ था। अध्यापन-काल में उन्होंने तीन पुस्तकें लिखी थीं। 'गुजरात का राजतंत्र' व विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'इतिहास दर्शन' उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

सरकार करायेगी त्रिलोचन का इलाज

'भारतीय वाङ्मय' के गत सितम्बर अंक में यशस्वी कवि त्रिलोचन शास्त्री की दयनीय स्थिति पर मार्मिक लेख प्रकाशित हुआ। संयोग ही है कि त्रिलोचनजी के स्वास्थ्य पर दिल्ली सरकार की निगाह पड़ गयी। लम्बे समय से बीमार त्रिलोचन शास्त्री के उपचार का खर्च दिल्ली सरकार वहन करेगी। इस सम्बन्ध में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने निर्देश जारी कर दिए हैं। नब्बे वर्षीय प्रसिद्ध कवि त्रिलोचन शास्त्री को दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी ने 1989-90 में शलाका सम्मान से पुरस्कृत किया था।

पुरुषोत्तमदास मोदी

साधना के अवधूत

■ प्रज्ञाचक्षु

पुरुषोत्तमदास मोदी व्यक्ति नहीं संस्था थे। उस संस्था के तमाम दरवाजे खुले थे। उनसे होकर प्रकाश की किरणें मोदीजी के जीवन में भर उठी थीं। वे बाहर से देखने में चाहे जितने अस्वस्थ लगें लेकिन भीतर से आलोकित थे। एक आभा थी उनके अन्दर जो वाणी और लेखनी से समय-समय पर प्रस्फुटित होती रहती थी। अनुभूतियों और संस्मरणों के भण्डार थे। उनमें साहित्यकार की भावुकता, कलाकार की सृजनात्मकता और व्यवसाई की कार्य कुशलता का अद्‌भुत समन्वय था। यदि ऐसा नहीं होता तो वे अपने पिता के पैतृक गल्ला और कपड़े के व्यवसाय में लग जाते, प्रकाशन व्यवसाय में न आते। लेकिन पुस्तकों से स्वाभाविक लगाव था। पुस्तकों के बीच रहकर सृजनकर्म उन्हें सुखद अनुभूति से भर देता था। यह अनुभूति ही उन्हें संघर्ष के लिए ताकत देती थी। इसी ताकत के भरोसे ही वे गोरखपुर से खाली हाथ आए और वाराणसी में इतना प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान खड़ा किया जो देश के गिने-चुने प्रकाशन संस्थानों में गरिमामय स्थान रखता है।

अद्‌भुत गुरुत्वाकर्षण : माखनलाल चतुर्वेदी के सान्निध्य ने मोदीजी को पत्रकारिता के गहन गुर सिखाये, चित्र में पं० माखनलाल चतुर्वेदी के साथ।

साहित्य के प्रति भावात्मक लगाव ने ही मोदीजी को प्रेमचंद, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बनारसीदास चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों का सान्निध्य दिलाया। माखनलाल चतुर्वेदी के चरणों में जहाँ पत्रकारिता के गुर सीखे वहीं साहित्यकारों के सान्निध्य से सृजनकर्म की प्रेरणा ली।

मोदीजी का चिंतन भारतीय जीवन-दर्शन में समाया हुआ था। देश के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के अध:पतन, पश्चिम से अपसंस्कृति का हमला और भूमण्डलीकरण के कारण बाजार-व्यवस्था का लगातार मजबूत होते जाना उन्हें झकझोरता था। इसे वे समय-समय पर 'भारतीय वाङ्मय' के सम्पादकीय में व्यक्त करते रहते थे। भारतीय जीवनमूल्यों का छीजना उन्हें चिंतित करता था।

उन्होंने लिखा—''विगत चार दशकों से हमारे देश ने भौतिक समृद्धि के लिए औद्योगिक और यांत्रिक संसाधनों की ओर दृष्टि केन्द्रित की। जिस मनुष्य के लिए इन सबकी अपेक्षा है, उसके निर्माण की ओर, उसे शिक्षित करने की ओर, ध्यान नहीं दिया गया, न दिया ही जा रहा है। फलस्वरूप समृद्धि की सभी योजनाएँ विफल हुईं और शिक्षाविहीन, विवेकशून्य व्यक्ति में विकृति आती गई। देश जनतंत्र के अपने मूल आधार से छटक रहा है और व्यक्तिवादी होता जा रहा है, जिससे उसमें सभी प्रकार की विकृतियाँ आती जा रही हैं। यही कारण है कि विकास और प्रगति के सभी साधन भ्रष्ट और अपराधग्रस्त हो गए। आज हम राजनीतिज्ञों की जमींदारी में रह रहे हैं, जिस प्रकार जमींदारों के कारिंदे उनके जाने-अनजाने रियाया का दोहन करते थे, आज वही काम उनके प्रशासनिक अधिकारी कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में दोनों ही जमींदार हो गये हैं।'' मोदीजी इस बात से चिंतित रहते थे कि हर तरफ सिर्फ भौतिक समृद्धि के लिए मारामारी मची है। 'मनुष्य' के निर्माण पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

भारतीय मनीषियों ने 'मनुष्य' के निर्माण पर सबसे ज्यादा जोर दिया था। एक सम्पूर्ण व्यक्ति के निर्माण की चिंता की थी। लेकिन आज 'अर्थ' इस कदर महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है कि समाज से मानवता तिरोहित होती जा रही है और व्यक्ति उत्पादकता का पर्याय बनता जा रहा है।

मोदीजी स्वकेन्द्रित नहीं रहे। अपने भीतर छिपी असीम ऊर्जा को विभिन्न क्षेत्रों में फैलाया। समाज के प्रति अपने दायित्वों को लेकर हमेशा सतर्क रहे।

जब वे गोरखपुर में थे तभी गीता प्रेस के उन्नायक हनुमानप्राद पोद्दार का स्नेह उन्हें प्राप्त हुआ और पोद्दारजी ने जब वाराणसी में मूक-बधिर विद्यालय की स्थापना की तब मोदीजी को उसका मंत्री नियुक्त किया। समाजसेवा की जो यात्रा वहाँ से शुरू हुई वह अनवरत जारी रही। जब काशी में बसे तो मुरारीलाल केडिया के स्नेहपात्र बने। उन्होंने मोदीजी को न केवल काशी गोशाला से जोड़ा बल्कि मारवाड़ी युवक संघ का मंत्री बना दिया। बाद में उन्हें मारवाड़ी अस्पताल के सहायक मंत्री का दायित्व सौंपा गया। इसी दौरान श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला काशी आए और मोदीजी को मुमुक्षु भवन की व्यवस्था सौंपी।

1996 में मोदीजी पक्षाघात से पीड़ित हुए। वे उस आघात से पूरी तरह उबर नहीं पाए थे लेकिन न तो उनकी चैतन्यता में कमी आई और न ही कर्मयोग में।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के 38वें अधिवेशन में 31 अगस्त 1997 को मोदीजी का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन-पत्र भेंट किया 'दैनिक जागरण' समाचारपत्र-समूह के तत्कालीन प्रधान सम्पादक नरेन्द्र मोहन ने। अभिनन्दनपत्र में कहा गया—'आपने अपने साहित्यिक सम्पर्कों से जो अनुभव प्राप्त किया वह गोरखपुर से प्रकाशित 'आरोग्य' नामक पत्रिका के सम्पादन के रूप में पहली बार मुखर हुआ। बाद में यही अनुभव काशी से प्रकाशित पत्रिका 'मुमुक्षु' के सम्पादन में काम आया। तत्पश्चात प्रकाशक संघ के मुख पत्र 'हिन्दी प्रकाशक' के सम्पादन में इसी अनुभव का हम सबको लाभ मिला।' अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रति आपका योगदान स्मरणीय है। आपने अपने दो सत्रों के कार्यकाल में इस संगठन के महामंत्री पद को सुशोभित किया और चार वर्ष तक इस संगठन के मुख पत्र 'हिन्दी प्रकाशक' का सम्पादन किया।

आपके कार्यकाल में यह संगठन उन्नति के पथ पर अग्रसर रहा है।

'वाराणसी पुस्तक व्यवसायी परिषद' के संरक्षक रहने के साथ-साथ 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' तथा 'उत्तर प्रदेश भाषा निधि' जैसी अनेक व्यापारिक और साहित्यिक संस्थाओं से किसी न किसी रूप में जुड़े रहे हैं। मोदीजी राजनीतिक स्थिति पर चर्चा करते थे और राजनीतिक शुचिता में आई गिरावट पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करते थे। वाराणसी की विराट सांस्कृतिक विरासत के उत्तरोत्तर अध:पतन से भी दुखी रहते थे। न वह वाराणसी रह गया और न वे लोग रह गए। बाहर से लगातार लोगों के आगमन से बनारसीपन लगभग समाप्त हो गया है। विश्वविद्यालय प्रकाशन ने वाराणसी और वाराणसी के ऐसे लोगों, जो वाराणसी को जीते रहे हैं, (जैसे केदार शर्मा और बड़े गुरु) की पुस्तकें प्रकाशित कर वाराणसी को जिन्दा रखने का प्रयास किया है। पूर्वांचल में साहित्यिक लौ जल रही है तो इसी प्रकाशन संस्था के कारण।

मोदीजी मोक्ष नहीं चाहते थे। बार-बार जन्म लेकर देश, समाज और साहित्य की सेवा करना चाहते थे।

काशी में महाकवि जयशंकर प्रसाद की उपेक्षा से मोदीजी दुखी थे। प्रेमचंद के पीछे पूरा साहित्यिक समुदाय भाग रहा है लेकिन जयशंकर प्रसाद का कोई नाम ही नहीं लेता। वह पूछते थे कि क्या हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद के मुकाबले प्रसादजी का योगदान कम है? यह सही है कि प्रेमचंद ने समाज के दबे-कुचले लोगों को अपने साहित्य का विषय बनाया और प्रसाद ने भारतीय संस्कृति को। लेकिन संस्कृति के बिना कोई समाज जीवित रह सकता है क्या? प्रसादजी के लिए मोदीजी ने एक संस्था भी बनाई। काशी में जिस व्यक्ति की मृत्यु होती है उसे मोक्ष मिल जाता है। लेकिन मोदीजी मोक्ष नहीं चाहते थे। बार-बार जन्म लेकर देश, समाज और साहित्य की सेवा करना चाहते थे।

पुरुषोत्तमदास मोदी

एक समर्पित प्रकाशक

■ विजय प्रकाश बेरी

आठ अक्टूबर को प्रात: मोदीजी के नहीं रहने का समाचार स्तब्ध कर गया। विश्वास नहीं हुआ कि वे शनिवार को ही शारीरिक रूप से हम सबसे दूर चले गए। रविवार माँ विन्ध्यवासिनी के धाम में बीतता है। अत: जानकारी के अभाव में अन्तिम यात्रा में शामिल न होने की कसक रह गयी। अभी तो दो रविवार पूर्व माँ के धाम से लौटने पर डॉ० बदरीनाथ कपूर के आवास पर उनके अमृत महोत्सव में मोदीजी से भेंट हुई थी। प्रसन्नचित्त। अस्वस्थता का भाव कहीं नहीं। बड़े स्नेह से मिले। कम बातों में बहुत कुछ कह दिया। ऐसी आत्मीयता अब कहाँ?

चार दशक पूर्व एक दुबले-पतले आकर्षक व्यक्तित्व को रामघाटस्थित आवास पर देखा था। कभी-कभी पिताजी (स्व० कृष्णचंद्र बेरी) के साथ कार्यालय जाते समय भैरवनाथ से गोलघर जानेवाली गली के दाहिने हाथ स्थित मकान में ठहराव होता था। उस समय वहीं पुरुषोत्तमजी मोदी का निवास था। तन्मयता से प्रकाशक संघ और प्रकाशन की गतिविधियों के सम्बन्ध में चर्चा होती थी। घनिष्ठता बढ़ती गयी। पारिवारिक सम्बन्ध बढ़ता गया जिसमें अपनापन हुआ। मोदीजी कुशल प्रकाशक ही नहीं अच्छे लेखक और सुधी पाठक भी थे। इन्हीं गुणों के कारण वे प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता, लेखक और पाठक के बीच सुदृढ़ कड़ी के रूप में स्थापित हुए। प्रकाशन के कई दौर देखे। उतार-चढ़ाव देखा। पर अपने विचारों के प्रति अपरिवर्तित रहे। प्रकाशन के मूल सिद्धान्तों को उन्होंने आत्मसात कर लिया था। आध्यात्मिक प्रकाशन की तरफ रुझान हुआ। एक से बढ़कर एक कृतियाँ छाप डालीं। लगभग सभी विधाओं की पुस्तकों का प्रकाशन किया। यह सच है कि प्रकाशन की प्रमुख पीड़ा से प्रकाशक को गुजरना पड़ता है। इसकी अनुभूति वह कितनी गम्भीरता से करता है, यह उसकी मानसिकता पर निर्भर है।

प्रकाशक और लेखक एक सिक्के के दो पहलू हैं। यह सिक्का पुस्तक-विक्रेता के माध्यम से पाठक तक पहुँचता है। वे इन सभी प्रक्रियाओं से गुजरे। प्रकाशन का अनुभव, लेखन का अनुभव, पाठक का अनुभव, यह सभी उनमें समाहित था। बढ़ते इलेक्ट्रानिक मीडिया का दबाव, कम होते गम्भीर पाठक, खरीद में पर्दे के पीछे और टेबुल के नीचे का खेल एक गम्भीर प्रकाशक को व्यथित करने के लिए काफी है। फिर भी वे झुके नहीं। जूझते रहे, टूटे नहीं, टिके रहे। मोदीजी प्रकाशन को मात्र व्यवसाय ही नहीं अपितु मिशन के रूप में स्वीकार करते थे। इसलिए जीवन के अन्तिम क्षण तक सत्यप्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध रहे।

स्व० बेरी जी के साथ अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की स्थापना से उन्नयन तक मोदीजी का सक्रिय योगदान रहा। विभिन्न पदों पर रहते हुए हिन्दी-प्रकाशन और पुस्तक-व्यवसाय को उन्होंने संगठित किया। हिन्दी प्रकाशक संघ की मासिक पत्रिका का सम्पादन कार्य भी देखा। सम्पादन की यह सोच 'भारतीय वाङ्मय' के रूप में विगत आठ वर्षों से मुखरित होती रही। मोदीजी ने खूब पढ़ा और लिखा। पत्रिका के माध्यम से उन्होंने अपने को सम्पदाक के रूप में भी स्थापित किया।

ऐसे प्रखर चिंतक, सम्पादक, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता, पाठक तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोदीजी अब पार्थिव रूप से हमारे बीच नहीं है। उनकी यश: काया सदा-सर्वदा उनके कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रकाशमान रखेगी। स्तरीय प्रकाशन के लिए विख्यात उनके द्वारा स्थापित, चौक थाने के परिसर के बगल में 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' उनकी स्मृति को सजीव रखेगा। उनकी यादें प्रकाशन-जगत की थाती बनी रहेंगी।

(पुरुषोत्तमदास मोदीजी के निधन की खबर सुनकर हिन्द पाकेट बुक्स के संस्थापक व क्रान्तिकारी प्रकाशक-लेखक श्री दीनानाथ मल्होत्रा द्वारा मोदीजी के पुत्रद्वय को भेजा गया शोक-पत्र)

Dear Anurag & Parag,

I am sorry to hear the demise of your respected father Purushottam Dasji. Please accept my heart-felt condolence. He was one of the old guard who valued our traditions and high principles of book publishing. As a matter of fact only two days ago I was thinking of writing him a letter but last evening Shri Shyam Sunderji of Prabhat Prakashan phoned to me and gave me this news and I was shocked. I hope you will continue your work in the footsteps of your respected father. Please convey my condolence to the whole family.

D.N. Malhotra, *Hind Pocket Books*, Delhi

एक संवेदनशील व्यक्तित्व का जाना

■ एल. उमाशंकर सिंह

पुस्तकों की दुनिया में एक जानी पहचानी पगध्वनि शांत हो गई। पुरुषोत्तमदास मोदीजी अब हमारे बीच नहीं रहे। उनके जाने से अनन्त जैसी रिक्तता साहित्यप्रेमियों को आभास हो रही है। बनारसीदास चतुर्वेदी के बाद हिन्दी के लगभग सबसे बड़े पत्र-लेखक मोदीजी की स्मृतियाँ सभी परिचितों को कुछ न कुछ लिखने हेतु मजबूर कर रही हैं। आदरणीय मोदीजी पर मेरी एक योजना पुस्तक लिखने की बहुत पहले से बन रही है, फिलहाल श्रद्धा के कुछ वाक्य.....

वाकया 1954 का है। गोरखपुर में पुरुषोत्तमदास मोदी से एक अपरिचित ज्योतिषी मिला। उसे कर्णपिसाचिनी सिद्ध थी। उसने कहा कि ''आप प्रचार का कार्य करते हैं। निकट भविष्य में आप किसी बड़े तीर्थस्थल में जा बसेंगे और खूब ख्याति अर्जित करेंगे।'' ठीक वैसा ही हुआ। कपड़े व नमक-तेल (केरोसिन) के थोक विक्रेता परिवार में 19 अगस्त, 1928 को जन्मे पुरुषोत्तमदास मोदी गोरखपुर में 1950 से ही पुस्तक प्रकाशन व विक्रय का कार्य शुरू कर चुके थे। 1951 में गोरखपुर विश्वविद्यालय बनने के पूर्व गठित फाउण्डेशन सोसाइटी के सदस्य बने। 1957 में विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। तदुपरान्त युनिवर्सिटी कोर्ट के सदस्य चुने गये। उसी समय विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों को प्रकाशित करने की जिम्मेदारी सम्हाली। यशस्वी साहित्यकार धर्मवीर भारती ने प्रकाशन संस्थान का नाम 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' रख दिया। कुछ वर्षों में ही यह प्रकाशन राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित होने लगा। पारिवारिक असहयोग व मुद्रणसम्बन्धी समस्याओं के चलते श्री मोदी को 1964 में स्थायी रूप से काशी आना पड़ा, जिसे वे उस ज्योतिषी की भविष्यवाणी मानते थे, किन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि काशी-प्रवास की प्रेरणा ज्योतिषी से ही मिली, और संयोग भी ऐसा रहा कि काशी में भैरोनाथ, विश्वेश्वरगंज, पशुपतेश्वरनाथ, गायघाट, चौक, संकटमोचन व रामनगर आदि भिन्न-भिन्न स्थानों पर व्यवसाय व आवास हेतु जहाँ भी जगह चुनी वहाँ देवस्थलों का नैकट्य प्राप्त हुआ। आज 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' का नाम देश के शीर्षस्थ प्रकाशनों की सूची में है। प्रख्यात लेखिका शिवानी का पहला उपन्यास 'चौदह फेरे' यहीं से प्रकाशित हुआ। डॉ० भगीरथ मिश्र, गोपीनाथ कविराज, बलदेव उपाध्याय, डॉ० जयदेव सिंह, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सहित अनेक बुद्धिजीवियों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ यहीं से प्रकाशित हुए। न जाने कितने लेखकों ने इस प्रकाशन को बनाया और न जाने कितने लेखकों को इस प्रकाशन ने बनाया।

पुरुषोत्तमदास मोदी कुशल पत्रकार या सम्पादक ही नहीं थे, इनके अन्दर विवेकशील चिन्तक, साहित्यकार, अर्थशास्त्री, समाजसेवक व नैतिक पुरुष भी अपना घर बनाकर रहता रहा, शायद इसी कारण उनके व्यक्तित्व में वैविध्यता की रोचकता व एक पूर्ण युग-द्रष्टा की अभिव्यक्ति मिलती थी। किसी ने ठीक ही कहा कि ''मोदीजी व्यक्ति नहीं एक संस्था थे।'' वे धार्मिक थे, लेकिन पाखण्डी नहीं। व्यवसायी थे, लेकिन स्वार्थी नहीं। उनके अन्दर पूर्वाग्रह हो सकता था, लेकिन दुराग्रह किसी के प्रति नहीं था। किसी को खरी-खोटी भी सुनाई तो उसमें उसका हित निहितार्थ था। वे व्यंजना करते थे, लेकिन बुराई नहीं। वे जितना ही साहित्य के भविष्य को लेकर चिंतित रहते थे, उतना ही देश के भविष्य पर भी। वे पाण्डित्य के अखाड़ियों को सहजता की सीख देते रहते थे, तो नये रचनाकारों को गम्भीर चिंतन करने की सलाह भी। पिछली सदी के महत्त्व को जिस लहजे में स्वीकार करते थे, मोबाइल, आईपाड और इंटरनेट से लैस 21वीं सदी को भी उसी महत्त्व की दृष्टि से देखते थे। वे मीडिया के नैतिक क्षरण को पारम्परिक लोककलाओं के क्षरण की तरह बताते थे और उसके परिणामों से भी आगाह करते थे। वे अतीतवादी नहीं थे, लेकिन भविष्यवादी चिन्ताओं से खुद को घेरे रखने के आदी थे। जब वे बौद्धिकों के बीच घिरे होते तो देश-काल व साहित्य (और जब अकेले होते तो कार्य) की चिन्ताएँ माथे पर लकीरें बनाती थीं। लकीरें तो माथे से हटती ही नहीं थीं। जब कोई उनकी प्रशंसा कर रहा होता तो वे उसकी आँखों में देखकर छद्म या सच को छाँट लेते थे और जब खुद हँसते थे तो हृदय का हुलास उनकी आँखों में नमी ला देता था, शब्द रुँध जाते थे, गला भर जाता था, चेहरा सुर्ख हो जाता था। माँ के दुलार में रससिक्त

समाजसेवा की मानवीय जिद : मोदीजी ने मानव सेवा व समाज सेवा के क्षेत्र में बड़े-बड़ों के साथ मिलकर काम किया, नोपानीजी व बिड़लाजी के साथ।

पुरुषोत्तमदास मोदी एक कुशल पत्रकार या सम्पादक ही नहीं थे, इनके अन्दर विवेकशील चिन्तक, साहित्यकार, अर्थशास्त्री, समाजसेवक व नैतिक पुरुष भी अपना घर बनाकर रहता रहा, शायद इसी कारण उनके व्यक्तित्व में वैविध्यता की रोचकता व एक पूर्ण युग-द्रष्टा की अभिव्यक्ति मिलती थी।

दंतहीन अबोध बालक, ऐसी खिलखिलाहट (सच्ची हँसी) बिरल ही देखने को मिलेगी।

उनके कार्य-व्यवसाय में गहरे युगबोध को परखा जा सकता था। पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी से लम्बे निकटस्थ सम्बन्ध ने मोदीजी को पत्रकारिता के गहन गुर सिखाये, लेकिन प्रकाशनसम्बन्धी तकनीकी जानकारी उन्होंने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित प्रकाशनों की कार्यप्रणाली का लगातार अध्ययन करके स्वत: ही प्राप्त की। अनेक प्रकाशनों ने सम्पादक रखे लेकिन मोदीजी ने खुद ही प्रकाशन और सम्पादन किया, हजारों पुस्तकें इनके कुशल सम्पादन व प्रकाशन का परिचय देती हैं। 'भारतीय वाङ्मय' नामक मासिक पत्रिका मोदीजी सम्पादित करते थे, जो अब भी देश में प्रकाशित किसी भी साहित्यिक पत्रिका से अधिक संख्या में प्रसारित होती है। 'भारतीय वाङ्मय' साहित्य, संस्कृति, कला, सामान्य ज्ञान व विविध विषयों की पुस्तकों पर सूचनात्मक समाचार देने के लिए हिन्दी ही नहीं, गैरहिन्दीभाषी क्षेत्रों में भी चर्चित है। इसमें प्रकाशित मोदीजी के संस्मरण व सम्पादकीय पर प्रतिमाह सैकड़ों लोग पत्रों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे।

साहित्यिक वाद-विवाद से पृथक रहकर संवेदना पैदा करनेवाले साहित्य के पक्षधर रहे। पुरुषोत्तमदास मोदी के अन्दर जीवन के अन्तिम दिनों तक एक विद्यार्थी व जिज्ञासु रहता था, जो उन्हें नयी-नयी चीजों व स्थापनाओं की तरफ खींचता था। इसी प्रवृत्ति के कारण किशोरवय में ही वे साहित्य व साहित्यकारों के प्रति आदरपूर्वक आकृष्ट हुए। चाहते तो पारम्परिक पारिवारिक व्यवसाय से जुड़े रहकर धन्ना सेठ कहलाते, किन्तु ऐसा नहीं किया। साहित्य और किताबों की अंगुली पकड़ी। साहित्य ने संवेदना दी, लोकसेवा का भाव दिया, राष्ट्र व समाज के प्रति नैतिकता का बोध कराया, सही अर्थों में दुनिया को देखने की दृष्टि दी। वे लोभ से दूर हुए और लोक के करीब। अनेक युगपुरुषों का सान्निध्य मिला। गोरखपुर में 'आरोग्य' व 'हिन्दी वाङ्मय' पत्रिका का सम्पादन किया और 'मूक-बधिर विद्यालय' के सचिव बने। काशी पहुँचकर अंध विद्यालय, दुर्गाकुण्ड के सहमंत्री बने और काशी गोशाला के मंत्री व ट्रस्ट के अध्यक्ष हुए। मारवाड़ी युवक संघ के मंत्री, मारवाड़ी अस्पताल के सहायक मंत्री भी बनाये गये। श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने 1970 में 'काशी मुमुक्षु भवन' की व्यवस्था मोदीजी को सौंपी, आज उनके ही सद्प्रयास से वह गरिमामय स्थिति में है। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के मंत्री बने तो उसकी मासिक पत्रिका 'हिन्दी प्रकाशक' का सम्पादन भी किया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के परामर्शदाता रहे और 'मुमुक्षु' पत्रिका का सम्पादन करते रहे। श्री मोदी द्वारा किये गये कार्यों व प्राप्त-पुरस्कारों-सम्मानों की सूची भी पुस्तकाकार हो जाएगी, अत: कहा जा सकता है कि 1996 में पक्षाघात से शरीर जर्जर व पीड़ापूर्ण होने के बावजूद भी मोदीजी की चेतना व कर्म प्रभावित नहीं हुए और अन्तिम समय तक वे प्रतिदिन आठ-दस घण्टे बौद्धिक कार्य करते रहे। भारत के प्रकाशन क्षेत्र में मोदीजी अकेले रहे जो इतनी विशेषताओं के धनी थे। मोदीजी गत 19 अगस्त को 80वें वर्ष में प्रविष्ट हुए। हम उनके स्वस्थ व लम्बे जीवन की कामना कर रहे थे, ताकि उनके मार्गदर्शन का लाभ आनेवाली पीढ़ियों को भी मिले। किन्तु काल को मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं से कोई हमदर्दी नहीं होती। मोदीजी अचानक ही 6-7 अक्टूबर की मध्यरात्रि में अपने स्नेही लोगों को भौचक करके चले गए, विशाल अनुभवों की गठरी के साथ ही। एक युगद्रष्टा ने हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं।

मोदीजी चाहते तो पारम्परिक पारिवारिक व्यवसाय से जुड़े रहकर धन्ना सेठ कहलाते, किन्तु ऐसा नहीं किया। साहित्य और किताबों की अंगुली पकड़ी। साहित्य ने संवेदना दी और लोकसेवा का भाव दिया, राष्ट्र व समाज के प्रति नैतिकता का बोध कराया, सही अर्थों में दुनिया को देखने की दृष्टि दी। वे लोभ से दूर हुए और लोक के करीब।

मेरे लिए वे अभिभावक व गुरु थे। हमेशा कुछ न कुछ सिखाते-सुनाते रहते थे। अपने गुणों के संचित भण्डार को पूरी तरह खोल रखा था उन्होंने। इस भण्डार का लाभ लेनेवाला मैं अकेला नहीं हूँ। वे अपने पास आनेवाले हर जिज्ञासु से गम्भीर विमर्श करते थे, जिसमें उचित मार्गदर्शन भी स्पष्ट होता था। नयी और पुरानी पीढ़ी की ऊर्जा को बराबर मानते थे, शायद इसी कारण अनेक युवा लेखकों को महत्त्वपूर्ण कार्य देकर प्रोत्साहित करते रहते थे। पिछले चार महीने से लगभग प्रतिदिन 6-7 घण्टे मैं उनके साथ कार्य करता रहा, सीखता रहा। उनकी कमी बहुत अखर रही है।

मोदीजी : एक विरल व्यक्तित्व

■ हृदयनारायण दीक्षित

श्रद्धेय मोदीजी के निधन से वज्राघात लगा। मैं एक दिन पूर्व लखनऊ पुस्तक मेले पर लगे विश्वविद्यालय प्रकाशन के स्टाल पर था, श्री परागजी ने मेरे बारे में उन्हें बताया कि दीक्षितजी स्टाल पर आये हैं। उन्होंने फोन पर लम्बी बातचीत की। हमारे लेखन के लिए बधाई दी। हमारी पुस्तकों पर चर्चा की। वाराणसी आने का न्योता भी दिया। उस समय नहीं लगा कि यह हमारा उनका आखिरी संवाद है। वे हँसते हुए बतिया रहे थे, बतियाते हुए हँस रहे थे। समय प्रखर राष्ट्रभक्त, प्रख्यात हिन्दीसेवी और भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व से जुड़ी महान आत्मा को यों ही क्यों छीन लेगा? मृत्यु सत्य है। काल सत्य है, इसीलिए अंत के लिए कहा गया कि रामनाम सत्य है। जो आता है, सो जाता है इसीलिए संसार यह 'जगत' है। आवागमन ही सर्जन और विसर्जन है पर मोदीजी विरल थे। उन्होंने अपना अक्षर-संसार बनाया, शब्द-संसार बसाया, काव्य, सर्जन और संस्कृति के लिए जीवन लगाया। वे परिशुद्ध निष्काम भाव में जिये। मुझसे ही उनका कोई स्वार्थ न था।

वे 'जागरण' आदि अखबारों में मेरे लेख पढ़ते, मुझे फोन करते, उत्साहित करते, जरूरत से ज्यादा बड़ाई करते, राजनीति की तुलना में सर्जन की वरीयता बताते थे, बिना मिले ही ऐसा प्यार मुझे इतने बड़े से आदमी से पहली दफा मिला। फिर मैं एक राजनीतिक कार्यक्रम में वाराणसी गया, मोदी जी से मिला। वे ऐसे मिले जैसे गाय को अपना बछड़ा मिल गया है। मुझे उनमें मातृत्व के सारे गुण मिले। उन्होंने कई विषयों पर किताबें लिखने को कहा, मैंने हाँ कर दिया। राजनीतिक व्यस्तता के बीच वे टोंकाटोंकी करते थे, मैं लेखन के लिए उत्साह पाता था। अधबिच में उनका जाना बहुत अखरा। इस तरह कोई जाता भी नहीं। वे हमारे लिए अपना 'अनुराग' और 'पराग' अपने अंश, अपने संस्कार, रूप प्रतिरूप छोड़ गये हैं। मोदीजी जैसे लोग कभी निवर्तमान नहीं होते। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व और विचार सदा वर्तमान हैं। प्रेरक हैं। मैं अनुराग, पराग और पूरे परिवार के साथ दु:ख में दु:खी हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि मोदीजी की आत्मा को मोक्ष मिले और समूचे परिवार को उनका विछोह सहने की शक्ति।

(दीक्षितजी जाने-माने विचारक व स्तम्भ लेखक होने के साथ ही उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष व मुख्य प्रवक्ता हैं।)

पुरुषोत्तमदास मोदी : गुणग्राही व्यक्तित्व

■ नरेन्द्र नीरव

पुरुषोत्तमदास मोदी का देहांत वाराणसी के साहित्यिक व शैक्षणिक समाज की क्षति है। उन सभी विचारशील, अध्ययनशील और सृजनशील लोगों को उनकी कमी खलेगी जो पुस्तकों को पढ़ते हैं, लिखते हैं। स्व० कृष्णचंद्र बेरीजी के निधन से जो रिक्तता पैदा हुई थी वह अब ज्यादा गहरी हो गयी है। इन दो प्रकाशन-विभूतियों का कोई तीसरा विकल्प भी नहीं सूझ रहा है। यदि कोई है तो उसे प्रत्यक्ष होना चाहिए। लेखकों-रचनाकारों के लिए सुधी प्रकाशक सिर्फ प्रकाशक नहीं होते। यही बात सुधी सम्पादकों के लिए भी कह सकते हैं। ये प्रकाशक और सम्पादक गुणों के ग्राहक होते हैं। वे लेखकों की चार बातें भी सुनते हैं लेकिन यदि कलम में ताकत है तो किताबें/रचनाएँ छापते भी हैं और सरस्वती के साधकों को लक्ष्मी का प्रसाद (पारिश्रमिक) भी देते हैं।

हम सभी जानते है कि दृश्य पटल (सिनेमा और टी०वी० आदि) ने पुस्तकों को आंखों के सामने से हटा दिया है। जिस रफ्तार से साक्षरता बढ़ी है, क्रयशक्ति बढ़ी है, उस रफ्तार से किताबों की बिक्री नहीं बढ़ी है, घटी है। खासतौर से कविताओं, कथाओं, उपन्यासों की बिक्री निराशाजनक है। अकादमिक लोग सहज तरीके से कह देते हैं कि जो बातें हम मोटी पुस्तकों में ढूँढ़ते हैं उन्हें एक मिनट में कम्प्यूटर में पढ़ सकते हैं, फिर किताबों की क्या दरकार। जो खबरें हम टीवी पर देखते हैं उसके लिए घंटे भर अखबार क्यों पढ़ें?

विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक थाने से सटा हुआ है। उस परिसर में दो ही तरह के लोग जाते हैं। या तो थाने में विवाद सुलझाने या तो विश्वविद्यालय प्रकाशन में पुस्तकें लेने। हम अक्सर मोदीजी के यहाँ जाते समय सोचते रहे हैं कि पहरे पर खड़ा जवान हमसे रोककर पूछता क्यों नहीं कि 'कहाँ जा रहे हो?' वह भी जानता होगा कि जो थाने में नहीं जा रहा है, किताब की दुकान में जा रहा है—वह अपराधी नहीं होगा। किताब पढ़नेवाले अपराधी नहीं होते। इस तरह की मनोवैज्ञानिक सुविधा उ०प्र० के किसी अन्य थाने में नहीं है।

मोदीजी अक्सर पुस्तक-प्रकाशन की परेशानियों की चर्चा करते थे। पुस्तकालयों की दुर्दशा से क्षुब्ध होते थे। प्रकाशन उद्योग की अवदशा पर दु:खी होते थे। पुस्तक छापनेवाले का यह दर्द हिन्दी जगत की मनोदशा का प्रमाण है। बड़ी सरकारी संस्थाएँ, अन्य सामान की तरह, पुस्तकों की खरीद में भी कमीशन की अपेक्षा करती हैं। किताबें खरीदकर नहीं पढ़ने की निर्लज्जता के साथ पुस्तकालयों के प्रति उदासीनता भी इस दुर्दशा का कारण है। इस निराशा के बावजूद मोदीजी और बेरीजी सरीखे चिंतनशील प्रकाशकों ने सृजनात्मक पुस्तकों का प्रकाशन कभी रोका नहीं। हमारे जैसे छोटे लेखक भी उनके यहाँ प्रकाशित हुए। हमारे घरेलू पुस्तकालय में अनेक पुस्तकें ऐसी हैं जो हिन्दी प्रचारक संस्थान अथवा विश्वविद्यालय प्रकाशन से भेंट में मिली हैं। 'गांडीव' के सम्पादक भाई राजीव अरोड़ा भी किताबों के लिए प्राय: बेरीजी और मोदीजी को याद करते हैं। वस्तुत: मानवीय संवेदना, संचेतना और कल्पनाओं से सम्पूर्ण व्यक्ति ही पुस्तकों के सम्बन्ध का मर्म समझते हैं। किताबों का रिश्ता अनमोल है। जिस जगह बेरीजी शाम को बैठते थे वहाँ अब भी विद्वतजन जुटते हैं। जहाँ मोदीजी बैठते थे वहाँ भी जुटते रहेंगे। भाई अनुराग और परागजी मिलेंगे। क्या लिख रहे हैं? क्या पढ़ रहे हैं? कुछ बातें प्रतिक्रियाएँ होंगी। छात्र-छात्राएँ अपने टेबुल पर किताबें पसंद कर रहे होंगे। कारोबार की व्यस्तता के बीच सृजन का संवाद टूटेगा नहीं। 'क्या लेंगे?' चाय के साथ कुछ और? वहाँ मन को संतोष मिलता है। सामने बैठा हुआ आदमी तनिक भी 'बोर' नहीं हो रहा है। उसे 'कारोबार' के साथ ही कुछ और भी चाहिए जो उसकी भावनात्मक सृजनात्मक भूख को शांत कर सके। साहित्य की भूख को शात कर सके। पूर्ति कर सके। इस तरह के सम्पादक और प्रकाशक बहुत कम हैं। हमें मोदीजी के निधन पर याद आते हैं ऐसे लोग।

'आज' के सम्पादक विद्याभास्करजी, भैयाजी बनारसी, चंद्रकुमारजी, 'जनवार्ता' के ईश्वरदेवजी और इनके साथ के लोग। दिनमान, साप्ताहिक-हिन्दुस्तान, सारिका आदि पत्रिकाओं के सम्पादकगण। वे सभी समर्थ लेखक-चिंतक और संवेदनशील इंसान थे। मौजूदा भौतिक युग में सम्बन्धों के मूल्य भी ज्यादातर 'बाजार' के कारण बनते-बिगड़ते हैं। अखबारों व पुस्तकों के प्रकाशक मजबूरियों में हैं। फिर भी वे रचनाकारों से प्रतिबद्ध रहते हैं। मोदीजी ने 'मुमुक्षु' पत्रिका का प्रकाशन कभी बंद नहीं किया। आगे भी यह जारी रहनी चाहिए। बेरीजी ने भी हिन्दी प्रचारक पत्रिका और प्रचारक बुक क्लब बंद नहीं किया। जाहिर है कि जीवंत स्मृतियाँ गाढ़े समय में सदैव संबल देती हैं। श्री पुरुषोत्तमदास मोदी की स्मृतियों के संबल से उनका परिवार, प्रकाशन तथा उनके सम्बन्धीजन पल्लवित-पुष्पित होते रहेंगे, यह विश्वास है। उनकी अमर आत्मा को नमन।

मोदीजी अक्षय ऊर्जा के धनी थे : प्रो० कुशवाहा

[मोदीजी के 78वें जन्म-दिवस समारोह की काशी के दैनिक 'गांडीव' में प्रकाशित रिपोर्ट।]

जानेमाने साहित्य मनीषी, कुशल सम्पादक, पत्रकार एवं समाजसेवी प्रकाशक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी का जन्मदिन उनकी पौत्र-पौत्रियों ने श्रद्धा के साथ मनाया जिसमें गणमान्य लोगों ने भाग लेकर श्री मोदी के सौ वर्ष से ज्यादा जीने की कामना करते हुए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की विस्तारपूर्वक चर्चा की। इस अवसर पर संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार श्री पारसनाथ सिंह ने की और संचालन किया मोदीजी की प्रिय पौत्री श्रुति ने।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० सुरेंद्र सिंह कुशवाहा ने कहा कि हिन्दी प्रकाशकों में श्री मोदी अक्षय ऊर्जावान व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। गोरखपुर से वाराणसी तक ही नहीं सारे देश में वे अपने प्रकाशनों के माध्यम से आज भी अच्छी पहचान रखते हैं। वरिष्ठ पत्रकार श्री बच्चन सिंह ने कहा कि श्री मोदी का व्यक्तित्व हर मोर्चे पर महान व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता रहा, वह चाहे मूकबधिरों के स्कूल की बात रही, चाहे प्रकाशन अथवा लेखन की बात रही।

प्रोफेसर शुकदेव सिंह ने मोदीजी के सन्दर्भ में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए मोदीजी को विराट व्यक्तित्व का हस्ताक्षर कहा। वहीं रामकली सर्राफ, हरिमोहन साह, मदनमोहन पारिख, डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह, सीताराम खेतान, लक्खी राम अग्रवाल, सत्यनारायण अग्रवाल, इंद्रदेव मिश्र प्रभृति अनेक लोगों ने मोदीजी के जन्मदिन को, उनके साथ बीते अनेक संस्मरणों में जीते हुए कहा कि मोदीजी का लम्बा जीवन चोटी के पत्रकारों, साहित्यकारों के बीच गुजरते हुए बीता है। सम्बन्धों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करना इनका विशेष गुण रहा है। अपने 79 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने समय को जीने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को भी जिया। इसीलिए कर्नाटक के राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी जैसे लोग वाराणसी में आते हैं तो बिना मोदीजी से मिले नहीं जाते, क्योंकि मोदीजी में अपने नाम के अनुरूप गुण के साथ हर किसी को अपनेपन का भी बोध होता है।

पुरुषोत्तमदास मोदी : एक इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व

■ गगनेन्द्र कुमार केडिया

जैसे इन्द्रधनुष में अनेक रंग होते हैं, वैसे ही मेरे पितृव्य (चाचा) स्व० मोदीजी के व्यक्तित्व के भी अनेक रंग थे जिनमें से कुछ की चर्चा मैं यहाँ करूँगा।

जब 1964 में मोदीजी गोरखपुर से काशी आए तब यहाँ उनका परिचय नगण्य-सा था। दैवकृपा से ऐसे में, उनका सम्पर्क मेरे पिताजी स्व० मुरारीलाल केडिया से हुआ। पिताजी केवल मारवाड़ी समाज में ही नहीं, काशी के अन्य सभी समाजों यथा, गुजराती, पंजाबी, अग्रवाल, खत्री, माहेश्वरी आदि में भी अत्यन्त लोकप्रिय थे। मारवाड़ी समाज की सभी संस्थाओं का कार्यभार, कभी न कभी, किसी न किसी पद पर उन्होंने सँभाल रखा था। जब मोदीजी काशी आये तो उन्हें एक ऐसे कर्मठ ठलुए की आवश्यकता थी जो उनके कार्यभार को हलका कर सके। 'कर्मठ ठलुआ' के प्रयोग से चौंकिए मत। 'ठलुआ' का अर्थ 'निठल्ला' नहीं होता। इसका अर्थ मस्तमौला होता है। भगवतीचरण वर्मा की ये काव्य-पंक्तियाँ इसे ठीक से परिभाषित करती हैं—

हम दीवानों की क्या हस्ती है, आज यहाँ कल वहाँ चले।

ठलुआ कर्मठता में भी अपनी मस्ती को बनाए रखता है और यही उसकी पहचान है। पिताजी 'ठलुआ बीरबल' थे। उनका काम हँसना-हँसाना, खाना-खिलाना था। वे सरल हृदय के दयालु व्यक्ति थे। प्रबन्धन में जिस कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है, वे उससे संपृक्त नहीं हो पाते थे। उन्होंने आनन-फानन में मोदीजी को काशी जीवदया-विस्तारिणी गौशाला, मारवाड़ी अस्पताल, काशी मुमुक्षु भवन सभा, हिन्दू सेवा सदन आदि संस्थाओं में संबद्ध कर दिया और मोदीजी को काशी के मारवाड़ी समाज में भली भाँति स्थापित कर दिया। समाज में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं—कृतज्ञ और कृतघ्न। मोदीजी प्रथम श्रेणी में थे। वे हर भाषण और लेख में सदा बोलते-लिखते थे कि पिताजी ने उन्हें काशी में स्थापित किया था। इसमें न केवल उनके कृतज्ञता-भाव का पता लगता है, वरन यह भी पता चलता है कि उनमें अहं भाव (इगो) बिल्कुल नहीं था, अन्यथा व्यक्ति शिखर पर पहुँचने के बाद, उसे वहाँ तक पहुँचाने वालों को विस्मृत कर देता है।

संस्थाओं के प्रबंध-कौशल में वे अत्यन्त निपुण थे। वे अत्यन्त अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। कर्मचारियों के साथ कार्य में शिथिलता से रुष्ट होकर कभी-कभी कठोर व्यवहार भी करते थे। उनकी इस अनुशासनप्रियता के कारण सामाजिक संस्थाओं में उनके विरोधी भी पैदा हो जाते थे। पर वे भली भाँति जानते थे कि अनुशासन के बिना कोई संस्था नहीं चल सकती और वे अपने मार्ग पर दृढ़ संकल्प के साथ अग्रसर होते रहते थे। इस नीति से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। इसी कारण उनका प्रबन्ध सुचारु रूप से चलता था। मुझे उनके साथ काम करने का अवसर वर्षों तक काशी गौशाला और काशी मुमुक्षु भवन सभा में प्राप्त हुआ। मृत्यु से 15 दिन पूर्व उन्होंने बड़े जोश-खरोश के साथ मुमुक्षु भवन की प्रबंध-समिति की बैठक की अध्यक्षता की थी। जब भवन के मंत्री श्री सीताराम खेतान ने रविवार सात अक्टूबर को फोन से उनके निधन की सूचना दी तो मैं स्तब्ध रह गया। कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था परन्तु मृत्यु ध्रुव सत्य है। जो आया है उसे जाना भी पड़ेगा। पर मोदीजी में अभी बहुत कार्यक्षमता शेष थी, इसी कारण उनका निधन अपूरणीय क्षति है। पिताजी को भी पक्षाघात हुआ था, पर मोदीजी से बहुत हलका। पर उन्होंने जिजीविषा (जीने की इच्छा) ही छोड़ दी। इस कारण पुन: स्वस्थ नहीं हुए और अल्पकाल की अस्वस्थता में ही गोलोकवासी हो गए। पर मोदीजी में जिजीविषा, आत्मबल और मनोबल कूट-कूट कर भरा था जिससे वे न केवल पुन: स्वस्थ हुए, वरन् पूर्ववत सक्रिय भी हो गए। यह उनके कठोर परिश्रम एवं अध्यवसाय का ही फल था कि गोरखपुर से लगभग खाली हाथ काशी आकर, विश्वविद्यालय प्रकाशन जैसा विशाल संस्थान बना डाला जो पुस्तक प्रकाशन एवं विक्रय में देश के अन्यतम प्रतिष्ठानों में से है। दुर्लभ से दुर्लभ पुस्तकें उनके संस्थान में उपलब्ध हो जाती हैं।

किताबों के तो वे कीड़े थे। उन्होंने हिन्दी साहित्य का गहन अध्ययन किया था। काशी ही नहीं, बाहर से आनेवालों के लिए भी उनका संस्थान तीर्थस्थान की तरह था जहाँ जाकर उनके दर्शन किए बिना एवं उनसे मिले बिना काशी की यात्रा सम्पूर्ण नहीं होती थी। जयशंकर प्रसाद के उनके संस्मरण अनमोल थे। पिछले 8 वर्षों से वे 'भारतीय वाङ्मय' के नाम से एक लघु पत्रिका प्रकाशित कर रहे थे जिसमें पूरे देश की हिन्दी जगत की गतिविधियों की जानकारी मिल जाती थी। इसमें उनके लिखे सम्पादकीय अद्भुत होते थे एवं अत्यन्त लोकप्रिय थे। अब वैसे सम्पादकीय लिख पाना, किसी के लिए भी दुष्कर होगा। उनका अन्तिम सम्पादकीय, रामसेतु पर, अक्टूबर अंक में, प्रकाशित हुआ है। उसकी कुछ मर्मस्पर्शी पंक्तियाँ मैं उद्धृत कर रहा हूँ—''आज देश में व्याप्त अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार इसलिए है कि हमने राम के आदर्शों को भुला ही नहीं दिया, उनका उपहास कर रहे हैं। गांधी जी की समाधि से आज भी ध्वनि निकल रही है—हे राम। आस्था विश्वास और परम्परा वह सेतु है जिसने देश के सभी भागों को एक दूसरे से जोड़ रखा है। इस सेतु को (आस्था-विश्वास के सेतु को) मत तोड़िए, नहीं तो देश बिखर जायेगा।'' उनके संस्थान से प्रकाशित ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। किसी अच्छी कृति का आर्थिक पक्ष कमजोर होने पर भी वे उसे प्रकाशित करने में संकोच नहीं करते थे। यह हिन्दी साहित्य के प्रति उनके लगाव को दर्शाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके सुपुत्रद्वय चि० अनुराग-पराग, उनकी धरोहर को न केवल सहेज कर रखेंगे, वरन् उसमें और निखार लाएँगे तथा और अधिक पुष्पित-पल्लवित करेंगे। यही उनकी अपने पिता के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शोक वक्तव्य

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष **डॉ० काशीनाथ सिंह** ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रकाशन के कारण बनारस की पहचान अन्य शहर और देश में भी बढ़ी। इसका श्रेय मोदीजी को ही है। वे अच्छे इंसान के साथ ही साहित्यकारों के महत्त्व को समझने वाले थे। प्रकाशन उनके लिए महज व्यवसाय नहीं था बल्कि साहित्य की सेवा भी थी। उनके द्वारा सम्पादित पुस्तक 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' प्रामाणिक पुस्तक है जिसकी चर्चा साहित्य-जगत में बड़े सम्मान से होती है।

वाराणसी के राष्ट्रीय स्तर के कवि **श्री ज्ञानेन्द्रपति** ने अपने शोक-सन्देश में कहा कि मोदीजी का निधन मेरे लिए व्यक्तिगत शोक है। वे केवल पूर्वांचल के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकाशक ही नहीं थे बल्कि साहित्यकार और लेखक थे। उनका सरोकार साहित्य से केवल व्यवसायिक नहीं था बल्कि रचनात्मक सोच के चलते उनकी कलम में भी तेवर था।

मोदीजी : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

■ बच्चन सिंह

पुरुषोत्तमदास मोदी पेशे से प्रकाशक थे लेकिन कर्म और प्रवृत्ति से साहित्यमनीषी, कुशल सम्पादक तथा समाजसेवी थे। सन् 1964 में जब गोरखपुर से वाराणसी आए तब उनके लिए व्यावसायिकता गौण थी, समाजसेवा प्रमुख। यदि वे व्यावसायिक दिल-दिमाग के होते तो गोरखपुर में ही अपने पैतृक व्यवसाय में रम जाते लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उनके भीतर बैठा हुआ साहित्यकार, चिंतक और समाजसेवी उन्हें वाराणसी खींच लाया क्योंकि चिंतन-मनन की साधना-भूमि वाराणसी ही था। पत्रकारिता का तीर्थस्थल तो वाराणसी ही था। यहाँ आकर ही वे कर्म की साधना कर सकते थे, पुस्तकों के बीच खो सकते थे और अपनी ज्ञान-पिपासा शांत कर सकते थे। वाराणसी आकर उन्होंने एक साथ कई मोर्चे खोल दिए। यह उनके जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति के लिए ही सम्भव था। गोरखपुर से जो कुछ समेटकर लाये थे, उसे वाराणसी में चौतरफा फैला दिया। गोरखपुर में वे मूक-बधिरों के स्कूल के सेक्रेटरी थे, गोरखपुर विश्वविद्यालय फाउण्डेशन सोसाइटी के सदस्य थे, गोरखपुर विश्वविद्यालय बोर्ड के सदस्य थे लेकिन वाराणसी आने के बाद वे न जाने कितनी संस्थाओं को बनाने-संवारने में लग गए—एक अक्षय ऊर्जावान व्यक्ति के रूप में। वे अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक एसोसिएशन के सचिव बने, प्रकाशक संघ की पत्रिका 'प्रकाशक' के सम्पादन का दायित्व सम्हाला, 'हिन्दी वाङ्मय' का सम्पादन किया, फिर मासिक पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' के सम्पादन का दायित्व सम्हाला, मारवाड़ी युवक संघ के सचिव और उपाध्यक्ष रहे। इस संगठन का शानदार भवन बनवाना उन्हीं के बूते की बात थी। श्री राम लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल के सेक्रेटरी थे। श्री काशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला (ट्रस्ट बोर्ड) के अध्यक्ष तथा श्री काशी मुमुक्षु भवन सभा के उपाध्यक्ष थे। ये दोनों संस्थाएँ पुष्पित-पल्लवित हो रही हैं। मुमुक्षु भवन का स्वरूप तो ऐसा हो गया है कि उसे देखकर आश्चर्य होता है। क्या यही था मुमुक्षु भवन? इसकी कलकत्ता शाखा के उपाध्यक्ष श्री मोदीजी ही थे। इसके अलावा हिन्दू सेवा सदन अस्पताल के ट्रस्ट बोर्ड के संयुक्त सचिव, जयशंकर प्रसाद स्मृति वातायन के उपाध्यक्ष तो थे ही, उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग के भाषा संस्थान तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ) के सलाहकार भी रह चुके थे। जीवन के चौथेपन में मोदीजी उतने ही सक्रिय थे जितने युवा अवस्था में कभी रहे होंगे। उनकी तपश्चर्या देखकर आश्चर्य होता था। 'भारतीय वाङ्मय' देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मोदीजी समकालीन पत्र-पत्रिकाओं का कितना अध्ययन करते होंगे। इस छोटी सी मासिक पत्रिका में इतनी सूचनाएँ रहती हैं कि पाठक महीने भर की साहित्यिक गतिविधियों से पूरी तरह रूबरू हो जाता है। किस साहित्यकार-आलोचक ने क्या कहा, कहाँ कौन-सी गोष्ठी हुई, किसे कौन-सा पुरस्कार मिला—ये सारी सूचनाएँ पाठक को मिल जाती थीं जो विभिन्न हिन्दी और अंग्रेजी के समाचारपत्रों-पत्रिकाओं में बिखरी होती थीं। आश्चर्य की बात यह है कि इस कार्य में मोदीजी किसी की सहायता नहीं लेते थे। उनकी खोजी और पैनी दृष्टि समाचारपत्रों को आदि से अंत तक छान डालती थी। यह कार्य कुछ ऐसा ही होता है जैसे समुद्र में डूबकर अपने भीतर छिपाए मोती वाली सीपी कोई निकाल लाए। 'भारतीय वाङ्मय' को मोदीजी ने पुस्तकों के प्रचार-प्रसार का कारगर हथियार बना रखा था। पुस्तकों को लेकर हिन्दी प्रदेशों के सरकारों की दृष्टि, पुस्तकों की खरीद की त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया, स्तरीय पुस्तकों का पाठक तक न पहुँच पाना, प्रकाशकों की समस्या, पुस्तकों का महँगा होना आदि तमाम पहलुओं को परत-दर-परत खोलकर मोदीजी पाठकों और विद्वतजनों के सामने रख देते थे। पुस्तकों की पठनीयता को विस्तार देने का आन्दोलन चला रखा था उन्होंने।

बड़े साहित्यकारों से आत्मीयता : मोदीजी एक कुशल प्रकाशक तो थे ही, बड़े-बड़े साहित्यकारों की संगत उन्हें खूब भाती थी। महादेवीजी व पंतजी के साथ।

पुस्तकों को लेकर हिन्दी प्रदेशों की सरकारों की दृष्टि, पुस्तकों की खरीद की त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया, स्तरीय पुस्तकों का पाठक तक न पहुँच पाना, प्रकाशकों की समस्या, पुस्तकों का महँगा होना आदि तमाम पहलुओं को परत-दर-परत खोलकर मोदीजी पाठकों और विद्वतजनों के सामने रख देते थे। पुस्तकों की पठनीयता को विस्तार देने का आन्दोलन चला रखा था उन्होंने।

'भारतीय वाङ्मय' में लिखे गये उनके सम्पादकीय लेख पुस्तक प्रकाशन, विपणन और पाठक से सम्बन्धित हर समस्या पर सटीक प्रहार तो करते ही थे, उनके कुशल सम्पादक होने का परिचय भी देते हैं। उदाहरण के लिए हम 'भारतीय वाङ्मय' का अंक देख सकते हैं। दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले पर लिखी सम्पादकीय मोदीजी के भीतर के रचनाकार और सम्पादक को लाकर एक ऐसे मंच पर खड़ा कर देता जहाँ से कोई भी साहित्यप्रेमी, कोई भी पत्रकार उनके इस रूप का साक्षात्कार भली भाँति कर सकता है। सबसे पहले हम सम्पादकीय का नायाब शीर्षक देखें—'**पुस्तकें तलाशते पाठक, पुस्तकें तलाशती पाठक।**' यह अलंकारिक शीर्षक

मोदीजी जैसे प्रखर प्रतिभा के धनी व्यक्ति से ही सम्भव था। 'पुस्तकें पढ़ने की प्रवृत्ति' से सम्बन्धित एक दूसरी सम्पादकीय में वे लिखते हैं—'एक समय था जब देवकीनंदन खत्री की पुस्तकें चन्द्रकांता, चन्द्रकांता संतति, भूतनाथ आदि पढ़ने के लिए लोग हिन्दी सीखते थे। मुम्बई की लोकल ट्रेनें, ट्राम आदि में चन्द्रकांता के पाठक दिखाई देते थे। रेलवे बुक स्टाल भी यात्रियों को मानसिक आहार प्रदान करते थे।' कभी पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने कहा था—'वर्तमान युग के पाठक उस युग की कल्पना नहीं कर सकते जब देवकीनंदन खत्री के मोहजाल में पड़कर हम लोग सचमुच निद्रा और क्षुधा छोड़ बैठते थे।'

वे आगे लिखते हैं—'आज हैरी पॉटर लोगों को लुभा रहा है। अंग्रेजी में उसके लाखों पाठक हैं, हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में उनके पाठकों की कमी नहीं है। क्या देवकीनंदन खत्री की रचनाएँ हैरी पॉटर से कम रोचक हैं? कहावत है घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध।.....इसका दुष्परिणाम देश झेल रहा है, विशेषकर युवावर्ग। संवेदनाशून्य युवावर्ग अपसंस्कृति और अनैतिक कर्मों की ओर अग्रसर हो रहा है। साहित्य यानी पुस्तकें निर्जीव, हताश जीवन को जीवन्तता प्रदान करती हैं। निराशा में आशा का संचार, उत्साह और उल्लास का सृजन कर सत्कर्म की प्रेरणा प्रदान करती हैं। आज का युवक भटक गया है, दिशा प्रदान करनेवाली पुस्तकों से उसका सम्बन्ध टूट गया है। साहित्य मानवी मनोवृत्तियों-अन्त:करणों को निर्देशित करता है। संघर्षों से जूझने की क्षमता प्रदान करता है। पुस्तकें निराशा में आशा का संचार करती हैं।' जाहिर है कि इस सम्पादकीय में मोदीजी ने एक ऐसी सार्वजनीन और बुनियादी चिंता की ओर पाठकों का ध्यान खींचा है जो आनेवाले दिनों में विकराल और असाध्य रूप ग्रहण करने जा रही है। इस पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर पहले कालम में पुस्तक के सम्बन्ध में एक न एक कविता जरूर दी जाती है। यह सम्पादक की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक होती है।

मोदीजी का लम्बा जीवन चोटी के पत्रकारों और साहित्यकारों के बीच गुजरते हुए बीता है। जो सम्बन्ध बने, वे इतने घनिष्ठ हुए कि आज भी दोनों ओर से उनका निर्वाह होता है। यह हमें तब देखने को मिला जब कुछ दिनों पहले कर्नाटक के राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी वाराणसी आये थे। वे मोदीजी के लिए 'भेंट' लाना न भूले। यह 'भेंट' चंदन की लकड़ी से निर्मित गणेशजी की प्रतिमा थी।

मोदीजी ने महाकवि जयशंकर प्रसाद पर एक पुस्तक सम्पादित की है। यह पुस्तक प्रसादजी के जीवन से सम्बन्धित अछूते प्रसंगों को समेटने-सहेजने की कोशिश है और मोदीजी की साहित्यिक दृष्टि पर प्रकाश डालती है। 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' पुस्तक की 'प्रस्तावना' में मोदीजी लिखते हैं—'प्रसादजी की न जाने कितनी पंक्तियाँ रोमांचित करती रहती थीं और युवावस्था को रसमय बनाती थीं। आज भी उन्हें याद कर सिहरन सी हो उठती है। विभिन्न रचनाएँ, उपन्यास, कहानी, नाटक, काव्य एक ही व्यक्ति की कृति है, वह बहुआयामी व्यक्तित्व कौतूहल बनकर आता है। एक ही रचनाकार की रचनाओं में इतनी विविधता और इतना विरोधाभास। एक ही शरीर में जैसे अनेक आत्माओं का वास हो। प्रसाद मंदिर में शिव के आराधक जयशंकर प्रसाद ही अपनी रचनाओं में जीवन के यथार्थ को व्यक्त करते, दूसरी ओर मुखचन्द चांदनी जल से रचनाओं में रस उड़ेलते हैं। इतना ही नहीं, कल्पना के साथ दर्शन, पुराण, इतिहास और मिथक को अपनी रचनाओं में सजीव करते हैं।' यह भी मोदीजी की साहित्यिक दृष्टि जो प्रसादजी जैसे रचनाकार की रचनाओं में गहराई तक पैठ कर उसे पूरी तरह खंगालने का प्रयास करती थी।

इस तरह हम पुरुषोत्तमदास मोदी के बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक पाते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व स्तम्भ लेखक हैं।)

अप्रतिम पारखी, जुझारू व कर्मशील व्यक्तित्व

■ डॉ० नीहारिका

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी, एक दुर्बल व्यक्ति, जो सुदृढ़ता की साक्षात मूर्ति थे। एक व्यक्ति नहीं, एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व थे। उस दुबले-पतले कमजोर से दिखते कलेवर के अन्दर एक कुशाग्र, बुद्धिमान, त्वरित निर्णायक, अप्रतिम पारखी, आश्चर्यजनक जुझारू और कर्मशील व्यक्ति का निवास है, यह उनसे क्षण-दो क्षण के वार्तालाप के बाद ही स्पष्ट हो जाता था। हर विषय, चाहे विज्ञान से सम्बन्धित हो अथवा कला या वाणिज्य से, सब पर उनका अधिकार और ज्ञान चमत्कृत कर देता था। देश की वर्तमान दशा और दिशा, समस्याँ और निराकरण पर उनके विचार अभिभूत कर देते थे। उनकी योग्यता, विद्वत्ता और जुझारूपन के साथ ही बच्चों जैसी चंचल हँसी दैव का उपहार ही थी। हर क्षण सजग निगाहें कार्यालय ही नहीं, विश्वविद्यालय प्रकाशन परिवार, जिसमें हम लेखक-लेखिकाएँ भी शामिल हैं, और उनके भी परिवारजन (हमारे बच्चे आदि) सबका कुशल-क्षेम जानने को सदैव आतुर रहती थीं। वह व्यक्ति अचानक हमें छोड़कर चला गया। वह भी उस समय जब हम सब मान रहे थे कि वे अब बिल्कुल स्वस्थ और ठीक हैं। क्योंकि एक लम्बी अस्वस्थता के बाद वे पुन: कार्यालय आने लगे थे। हालांकि अस्वस्थता में भी इन्होंने कार्य करना तनिक भी नहीं छोड़ा था। ऐसा कर्मशील व्यक्ति कैसे जा सकता है? शायद भगवान को भी एक अत्यन्त कर्मठ, जुझारू और संकल्पवान व्यक्ति की आवश्यकता थी और भगवान के आगे हम असहाय एवं विवश हो जाते हैं।

मोदीजी का महाप्रयाण काशी ही नहीं, पूरे पूर्वांचल की अपूरणीय क्षति है, प्रकाशन-जगत और विद्वत्समाज की क्षति है। किन्तु यह मेरी व्यक्तिगत क्षति भी है। उनके प्रयाण की सूचना ने मुझे हतप्रभ कर दिया। ऐसा लगा जैसे मैंने एक बार पुन: अपना अभिभावक खो दिया। उनका वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन मेरे लेखकीय जीवन का एक महत्त्वपूर्ण सोपान था और भविष्य में भी रहेगा। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके समस्त परिवार, जिसमें मैं भी सम्मिलित हूँ, को यह दु:ख सहने की क्षमता दें और उनके सपनों, आकांक्षाओं और योजनाओं को सफलीभूत करने में सहायता प्रदान करें।

शोक वक्तव्य

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष **डॉ० अर्जुन तिवारी** ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मोदीजी हर विद्या के मर्मज्ञ थे। उनके जैसे प्रकाशक, सुधी सम्पादक और लेखक की अनुपस्थिति खटकती रहेगी। साहित्य से अधिक लगाव के कारण वे साहित्यकारों-लेखकों को बड़ा सम्मान देते थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ० युगेश्वर** ने अपने शोक-सन्देश में कहा है कि मोदीजी स्वभाव से सज्जन पुरुष थे। प्रकाशन-व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद उनमें प्रकाशक के वे पक्ष नहीं थे जिनके चलते प्रकाशक और साहित्यकार के बीच सम्बन्ध मलीन हो जाता है। उनका सृजन-पक्ष सुदृढ़ था। साहित्यकारों के प्रति उनमें अनुकरणीय अनुराग था। यही कारण है कि डॉ० बदरीनाथ कपूर के जन्मदिन पर उनके घर पर आयोजित संगोष्ठी में मोदीजी सीढ़ियाँ चढ़कर गए। उनका उत्साह और साहित्य-प्रेम देखकर लोग दंग थे। ऐसे महानुभाव का अभाव खलता है।

पुरुषोत्तमदास मोदी : हिन्दी के श्रेष्ठ प्रकाशक

■ डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

पतला-दुबला शरीर। जीवन की ढलान पर तो एकदम कृशकाय हो गये थे। हाथ की छड़ी सहारा बनती थी। एक हाथ सीने के पास चिपका रहता था। लकवा के कारण हाथ के साथ पाँव भी कुछ अशक्त-सा दिखाई देता था लेकिन कार्य करने की प्रबल इच्छा। योजनाओं को बनाने और उन्हें कार्य में बदल देने की अपार शक्ति थी मोदीजी में। मैं उनसे मिलने के बाद नयी शक्ति पाता था। जीवन को ढंग से जीने की प्रेरणा मिलती थी। मेरे मन में विश्वास जगता था कि व्यक्ति की आत्मा ही सबसे बड़ी है। कुछ करने की इच्छा है तो योजना बनाकर आगे बढ़ो। धन नहीं है, तब भी आप की आत्मिक शक्ति आपके कार्य को जीवन्त कर देगी। किसी दूसरे में नहीं, बल्कि अपने में विश्वास करो। व्यक्ति की आत्मा में शक्ति है तो वह केवल अपने भाव से ही अभाव को जीत लेता है।

मोदीजी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० किया था। उनके परिवार में दूसरी वस्तुओं का व्यवसाय था। मोदीजी का लगाव हिन्दी के कवियों और लेखकों से हुआ। फिर हिन्दी की पुस्तकों की ओर झुके। हिन्दी साहित्य के अनुराग ने ही उन्हें प्रकाशक बना दिया। हिन्दी के कई बड़े प्रकाशकों को जानता हूँ कि हिन्दी साहित्य में गहरी रुचि के कारण ही वे हिन्दी के प्रकाशक बने। कुछ के पुत्र इसमें रुचि लेकर आगे बढ़े और कुछ ने साहित्य को दण्ड प्रणाम कर लिया। साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन में कम आय देखकर पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन में लग गये। कुछ ने प्रकाशन को प्रणाम कर लिया। मैं दिल्ली से लेकर हिन्दी क्षेत्र के अनेक बड़े शहरों में विद्यमान उन बड़े प्रकाशकों में मोदीजी की गणना करता हूँ, जिनके कारण हिन्दी को उत्तम साहित्य मिला। कुछ प्रकाशक केवल कथा-साहित्य को प्रकाशित करना चाहते हैं। हिन्दी के दो शीर्षस्थ प्रकाशकों को जानता हूँ कि वे समीक्षा की पुस्तकों से दूर रहना चाहते हैं लेकिन मोदीजी ने डॉ० रामचन्द्र तिवारी जैसे समीक्षक का सम्पूर्ण साहित्य अपने यहाँ से प्रकाशित किया है। निर्गुणजी अच्छे कथाकार थे। उनकी कथा पुस्तकों का प्रकाशन किसी बड़े प्रकाशक ने नहीं किया। मोदीजी ने उनकी ग्रंथावली छापी। इससे उन्हें खास आर्थिक लाभ नहीं हुआ। हिन्दी का लाभ अवश्य हुआ। एक अच्छे कथाकार का साहित्य सुरक्षित हो गया।

पुरुषोत्तमदास मोदी हिन्दी साहित्य की दो प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत रुचि लेते थे—एक तो समीक्षा, कविता आदि की अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन। दूसरे साहित्य में सामान्य रुचि रखनेवालों को आकर्षित करनेवाली पुस्तकें हिन्दी के गद्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल की समीक्षा का विवेचन आदि तथा किसी बड़े रचनाकार की ग्रंथावाली का प्रकाशन, साहित्य से सम्बन्धित श्रेष्ठ प्रकाशन है। प्रसाद आदि के जीवन अथवा संस्मरण वाली पुस्तकें दूसरे प्रकार की हैं। उन्होंने बहुत से महापुरुषों की जीवनियाँ प्रकाशित की हैं। मैं यह नहीं कहता कि उनके सभी प्रकाशन श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन हैं। इसी काशी में श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने अधिक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। बेरीजी के बाद साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन में पुरुषोत्तमदास मोदी का स्थान है। साहित्यिक पुस्तकों के बाद उन्होंने धर्म और अध्यात्म से जुड़ी पुस्तकों का प्रकाशन किया है। संस्कृति से जुड़ी पुस्तकों के प्रकाशन में भी उनकी रुचि थी। बनारस पर बहुत पहले प्रकाशित पुस्तक का उन्होंने अपने यहाँ से प्रकाशन किया। वे अपराध जगत की पुस्तकें भी प्रकाशित करते थे। पुलिस और अपराध भी उनका प्रिय विषय था। काशी के जीवन से सम्बन्धित कई छोटी-छोटी पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित की है। साहित्य, संस्कृति और अपराध की पुस्तकों के बाद राजनीति, इतिहास, दर्शन आदि में भी उनकी रुचि थी। वे उन प्रकाशकों से भिन्न थे जो केवल आर्थिक लाभ के लिए पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। उनके दिमाग में समाज का हित और साहित्य का संवर्धन बराबर रहा करता था। आज का युग धन कमाने का है। बहुत कम प्रकाशक साहित्य पर ध्यान देते हैं। ऐसे में साहित्यिक दृष्टि को कायम रखते हुए प्रकाशन करना बहुत बड़ी बात है।

मोदीजी के आरम्भिक प्रकाशन की नींव गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन और उनके पाठ्यक्रम के लिए पुस्तकों की बिक्री थी। लगभग दो दशक तक मोदीजी गोरखपुर के बी०ए० हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित करते रहे। इससे उनके प्रकाशन को बहुत लाभ हुआ। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी के वरिष्ठ प्राध्यापकों का पूर्ण सहयोग मोदीजी को प्राप्त हुआ था। मोदीजी का व्यवहार ऐसा होता था कि वे वरिष्ठ लोग काशी आने पर उन्हीं के घर रुका करते थे। इसी तरह अन्य विषयों के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ प्राध्यापकों से भी उनका सम्बन्ध निरन्तर बना रहा। गोरखपुर विश्वविद्यालय के बाद उनके व्यवसाय को आघात लगा किन्तु वे पाठ्यक्रम से गम्भीर साहित्य की ओर मुड़ गये। मोदीजी की साहित्यिक समझ अच्छी थी। आधुनिक साहित्य से वे जुड़े हुए थे। आधुनिक हिन्दी साहित्य में भी गद्य से उनका लगाव अधिक था। इसलिए उन्होंने गद्य की अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। वे हर पुस्तक की पांडुलिपि को स्वयं देखते थे। पुस्तक के कम्पोज होने पर अन्तिम प्रूफ मोदीजी देखते थे। इसलिए उसमें त्रुटि नहीं हुआ करती थी। अन्य गम्भीर विषय की पुस्तकों को भी वे देखते थे।

पुरुषोत्तमदास मोदी को कायदे से मैंने बाद में जाना। सन् 1970 के आसपास उनसे परिचय हुआ था। मैंने गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग का पहला अधिवेशन उदय प्रताप कालेज वाराणसी में किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय तथा उससे सम्बद्ध अनेक महाविद्यालयों के प्राध्यापक इसमें सम्मिलित हुए। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से उद्घाटन कराया था। एक महाविद्यालय के प्राध्यापक की अशोभन बात से द्विवेदीजी दुखी भी हुए थे। उसमें पुरुषोत्तमदास मोदी आए और प्राध्यापकों को अपने यहाँ निमन्त्रित करने लगे। मेरी आपत्ति थी कि ये लोग उदय प्रताप कालेज के अतिथि हैं, अन्यत्र नहीं जायेंगे। मोदीजी ने बहुत धैर्य का परिचय दिया। मेरी उग्रता को भी वे टाल गये। बहुत से प्राध्यापक उनके यहाँ गए। बाद में मैंने अपनी त्रुटि पर सोचा। उसके बाद उदय प्रताप कालेज के हिन्दी विभाग के कुछ विद्वान प्राध्यापकों से मेरी ठन गई। कई लोग विश्वविद्यालय प्रकाशन में एक साथ साक्षात्कार से एक दिन पहले मिल गये। मेरा उन लोगों से विवाद हो गया। किन्तु मोदीजी एकदम तटस्थ रहे। उनका संतुलन मुझे प्रभावित कर गया।

मैं उनके जीवन की ढलान पर उनसे मिलने का आदती हो गया था। वाराणसी के चौक में जाऊँ तो मोदीजी से अवश्य भेंट करूँ। मोदीजी के यहाँ महाविद्यालय की पुस्तकें लेने के लिए जाता था, तब भी वे अधिक से अधिक लाभ महाविद्यालय को देना चाहते थे। एक व्यवसायी, साहित्यिक समझ, व्यवहारकुशलता और स्वयं साहित्यकार बनने की अभिलाषा ने उन्हें श्रेष्ठ प्रकाशक बना दिया था। मैं उनके जवानी के दिनों को याद करता हूँ। व्यवसाय की गहरी पकड़ और साहित्यिक समझदारी उनमें रहा करती थी।

वे प्रकाशक के साथ समाजसेवी भी थे। वृद्धों, अनाथों तथा गौसेवा में लगी संस्थाओं में रहकर मोदीजी ने वहाँ समाजसेवा का काम किया। यह उनके मन की उदारता को व्यक्त करता है। एक सामान्य से जीवन से धीरे-धीरे उठते हुए वे बड़े प्रकाशक बने, समाज की सेवा की और साहित्यकारों, मनीषियों, राजनेताओं से गहरे सम्बन्धों की स्थापना की, यह पुरुषोत्तमदास मोदी की श्रेष्ठता का प्रमाण है। मैं स्वर्गीय कृष्णचन्द बेरी, पुरुषोत्तमदास मोदी जैसे हिन्दी के प्रकाशकों का इसलिए श्रद्धा से स्मरण कर रहा हूँ कि इनके कारण हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तकें सामान्य पाठकों तक पहुँच सकी हैं।

मोदीजी को मृत्यु का पूर्वाभास

बच्चन

6 अक्टूबर की शाम। विश्वविद्यालय प्रकाशन में मोदीजी के पास बैठा था। लम्बे प्रकाशकीय जीवन में तमाम मनीषियों से उनकी मुलाकात हुई थी लिहाजा उनके पास विनोदप्रिय संस्मरणों का भण्डार था। उन्होंने एक विनोदप्रिय संस्मरण सुनाया, फिर खुलकर हँसे। मुझे भी हँसी आ गई।

वह देश के मौजूदा हालात, खासतौर पर राजनेताओं के आचरण को लेकर, विशेष चिंतित रहा करते थे। उनकी चिंता का दूसरा विषय होता था शिक्षा का लगातार गिरता स्तर और पुस्तकों के प्रति बढ़ती अरुचि। इन विषयों से जुड़े सवालों से टकराते लगभग एक घण्टा बीत गया। तभी उनकी निगाह मेज पर पड़ी बाबू श्यामसुन्दर दास की पुस्तक पर पड़ी। पुस्तक कबीर पर थी। उन्होंने मुझसे कहा कि इस पुस्तक के पुनर्प्रकाशन की उनकी योजना है। कबीर पर किसी विद्वान का नाम बताऊँ जो पुस्तक की भूमिका लिख सके। डॉ० शुकदेव सिंह होते तो वह लिख देते, असमय चले गए। फिर कहा, ''मैं रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास भी छापूँगा। डॉ० रामचन्द्र तिवारी उसका सम्पादन कर रहे हैं। मैंने तीस किताबें चिह्नित की हैं जिनकी रायल्टी समाप्त हो चुकी है और जो विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं। नागरी प्रचारिणी सभा तो कुछ कर नहीं रही है, मुझे करना है।''

मेरा मन कबीर साहित्य के विद्वान की तलाश में रमा हुआ था, इसी बीच वे मेरी ओर देखकर बोले, ''क्या करूँ, 80वें वर्ष में प्रवेश कर गया हूँ। जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं। मेरे बाद तो कोई करनेवाला है नहीं यह सब...।'' उनका गला भर्रा आया था, आँखें छलछला गई थीं....। वर्षों के सम्पर्क के दौरान मैंने उन्हें पहली बार मृत्यु की आशंका व्यक्त करते और जिन्दगी से हताश होते देखा। मैं भी थोड़ा विचलित हुआ लेकिन साहस बटोर कहा, ''भाई साहब, आप मृत्यु के विषय में कतई मत सोचा कीजिए। आप निश्चित रूप से सौ साल जिएँगे। आप जैसे संघर्षपुरुष के मुँह से ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं। मृत्यु तो एक दिन आती ही है, उसके बारे में क्या सोचना! आप सिर्फ कर्तव्य के बारे में सोचा कीजिए कि क्या-क्या करना है आपको।'' मोदीजी मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगे। यह उनकी स्वाभाविक मुस्कान थी जो हर समय उनके चेहरे पर खेलती रहती थी। तो क्या मोदीजी को मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था?

मैं जब उनसे विदा लेने लगा तो उनके चेहरे पर जो भाव उभर आए थे वे मेरे स्मृति-पटल पर हमेशा के लिए अंकित हो गए हैं। इन भावों में छिपी इबारत वह नहीं थी जो पहले जाने की अनुमति लेते समय हुआ करती थी। लग रहा था जैसे बोल रही हों, ''अभी बैठो। इस आखिरी मुलाकात में तुमसे ढेर सारी बातें करनी हैं।'' इससे पहले जब मैं वापसी के लिए उठता था तो मोदीजी तुरन्त अपने काम में लग जाते थे या मेरी बैठकी के दौरान काम भी करते रहते थे, बात भी करते रहते थे या किसी अन्य व्यक्ति से बातें करने लगते थे। इस बार....। इस बार तो उनकी नजरें तब तक मेरा पीछा करती रहीं जब तक मैं पूरी सीढ़ियाँ नहीं चढ़ गया....। यह सब पहली बार क्यों हुआ? वर्षों की मुलाकात में पहली बार। इस सवाल का रहस्य खोला डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने दूसरे दिन फोन करके—

''मोदीजी नहीं रहे।''

''क्या?'' मैं भीतर से थरथरा उठा। लगा अचानक आसमान से फेंक दिया गया होऊँ।

''क्या हो गया था उन्हें?'' मैंने काँपते स्वरों में पूछा।

''शायद दिल का दौरा पड़ गया था।'' फिर पिछली शाम के सारे दृश्य मेरी नजरों के सामने घूम गए। पिछले बारह वर्षों से पक्षाघात से पीड़ित थे। बायाँ हाथ निष्क्रिय था। बायाँ पैर भी ठीक से जमीन पर नहीं पड़ रहा था, फिर भी मोदीजी की सक्रियता में कोई कमी नहीं थी। प्रतिदिन कम से कम आठ घण्टे कार्य करते थे, आखिरी दिन तक करते रहे। जिस संस्था में रहे उसे सजाया-संवारा और आगे बढ़ाया। मुमुक्षु भवन उनके श्रम, ईमानदारी, क्षमता का गवाह है। सर्वसुविधा सम्पन्न एक खूबसूरत संस्था। देश भर में लोकप्रिय। अभी तो दो अक्टूबर को मोदीजी ने मुमुक्षु भवन में गांधी जयन्ती मनाई थी। आई०जी० के साथ ही शहर के कई प्रमुख विद्वानों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की थी। मृदुता और सरसता के तो जैसे प्रतिमूर्ति ही थे। उनके प्रशंसकों में चोटी के नेता, अफसर, विद्वान हर वर्ग के लोग थे। जो एक बार मिल लेता वह मोदीजी का फैन हो जाता। 'भारतीय वाङ्मय' मोदीजी के एकल प्रयास का नतीजा था। प्रतिदिन सुबह लगभग दो घण्टे तक हिन्दी-अंग्रेजी के चार-पाँच अखबार का कोना-कोना खंगाल डालते। सादा कागज और कलम साथ रखते, साहित्यसम्बन्धी कोई खबर दिखती तो उसे नोट कर लेते, अंग्रेजी में हो या हिन्दी में। जो खबर आम पाठक की नजरों से ओझल रहती, वह मोदीजी से बच नहीं पाती। नतीजा यह था कि 'भारतीय वाङ्मय' का हर अंक सूचनाओं का पिटारा बन जाता। देश भर का बौद्धिक जगत इस छोटी-सी पत्रिका की प्रशंसा करता था। टाइटिल पेज के प्रथम कालम में किताबों के बारे में प्रबुद्धजनों के विचार होते—गद्य में भी, पद्य में भी। इसे खोज निकालना कोई आसान काम नहीं था। मोदीजी जैसे अध्ययनशील व्यक्ति के ही बूते की बात होती थी।

'भारतीय वाङ्मय' के सम्पादकीय लेख ने अपनी अलग पहचान बनाई थी। कम से कम और सरल से सरल शब्दों में बड़ी-बड़ी बात कहना इस सम्पादकीय की अपनी खूबी रही है। भाषा की प्रांजलता, भाषा का तेवर और विचार-अभिव्यक्ति की बेबाकी पाठकों को झकझोर देती थी। मोदीजी पत्रिका के लिए मैटर जुटाने, सम्पादित करने से लेकर प्रूफरीडिंग खुद ही करते थे। उन्हें अफसोस था कि आजकल के डिग्रीधारी लड़के भी ज्ञानशून्य होते हैं। मैं चाहता हूँ, कोई लड़का मिले जो मेरा बोझ हलका कर सके लेकिन कोई नहीं मिल रहा। सारा काम अकेले करना पड़ता है पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ और उनके प्रूफ पढ़ने से लेकर पत्रिका के प्रकाशन तक। आजकल के लड़कों को पढ़ने-लिखने से कोई सरोकार नहीं है, किसी तरह डिग्री प्राप्त कर लिया।

मोदीजी में विपुल सम्भावनाएँ थीं। साहित्य, कला, शास्त्र जैसे विविध विषयों में वे पाठक जगत को कितना कुछ देते, इसके बारे में हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं। लेकिन हर किसी को ढेर सारी आशाएँ तो थीं ही। वे अच्छे पत्रकार थे, चिंतक थे, सम्पादक थे, साहित्यमनीषी थे। पता नहीं, कितनी विशेषताएँ समेटे थे अपने भीतर। वे किसी भी विषय की पांडुलिपि की स्तरीयता उस पर एक नजर डालते ही परख लेते थे। चोटी के कथाकार द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' और महाकवि जयशंकर प्रसाद पर एक पुस्तक का सम्पादन स्वयं किया। प्रसादजी की स्मृति में एक सभागार के निर्माण के लिए प्रयत्नशील थे। उन्हें लेकर कई कार्यक्रम भी आयोजित किये। इन दिनों एक कहानी-संकलन का सम्पादन किया जो प्रेस में है। इस संकलन में उन कहानीकारों को भी स्थान मिला है जो खेमेबाजी के शिकार हैं। संकलन में सम्पादकीय वक्तव्य पढ़ने लायक है।

मोदीजी का परिवार भरा-पूरा है। दो सुयोग्य पुत्र हैं—अनुराग मोदी और पराग मोदी। दोनों बचपन से ही मोदीजी के कार्यों में हाथ बँटाते रहे हैं। उनकी नीतियों और कार्यशैली से अच्छी तरह वाकिफ होंगे। हम उनसे आशा कर सकते हैं कि वे मोदीजी के सपनों को पूरा करेंगे।

पुरुषों में उत्तम थे मोदी जी

■ बदरीनाथ कपूर

कवि व लेखक, प्रकाशक व मुद्रक, विद्यार्थी व शिक्षक, व्यवसायी व उद्योगपति, आयोजक व संयोजक, यहाँ तक कि अधिकारी व नेता भी अपनी-अपनी समस्याएँ लिये मोदीजी के पास पहुँचे रहते थे। दरबार सबके लिए खुला रहता था। वे सबकी सुनते थे, उचित परामर्श देते थे और यथाशक्ति उनकी सहायता-सहयोग भी करते थे। आगंतुक के मुख पर संतुष्टि झलकने लगती थी।

मोदीजी सरल भी थे और सहृदय भी। गुणी भी थे और गुणग्राहक भी। उनका 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' काशी का ऐसा केन्द्र-स्थल था जहाँ नित्य ही कवि और लेखक, प्रकाशक और मुद्रक, विद्यार्थी और शिक्षक, व्यवसायी और उद्योगपति, आयोजक और संयोजक, यहाँ तक कि अधिकारी और नेता भी अपनी-अपनी समस्याएँ लिये पहुँचे रहते थे। मोदीजी का दरबार सबके लिए खुला रहता था। वे सबकी सुनते थे, उचित परामर्श देते थे और यथाशक्ति उनकी सहायता-सहयोग का वचन भी देते थे। आगंतुक के मुख पर संतुष्टि झलकने लगती थी। उनका व्यवहार सभी के प्रति उत्तम होता था। इस प्रकार अपने व्यवहार से वे अपना नाम पुरुष-उत्तम सार्थक करते थे। मोदीजी का जन्म गोरखपुर के वस्त्र-व्यवसायी मारवाड़ी परिवार में 19 अगस्त, 1928 को हुआ था। पुरुषोत्तम मास में जन्म होने के कारण उनका नामकरण पुरुषोत्तमदास किया गया था।

मोदीजी की सम्पूर्ण शिक्षा गोरखपुर में हुई। हिन्दी से उन्होंने एम०ए० किया। कॉलेज के साहित्यिक क्रिया-कलापों में उनकी भागीदारी बढ़-चढ़कर रही। उन्हीं के कुशल संयोजकत्व में सन् 1945 में सेंट एण्ड्रयूज़ कॉलेज के प्रांगण में विराट् कवि-सम्मेलन हुआ, जिसमें 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा जैसे श्रेष्ठ कवियों ने सहभागिता की। उस कवि-सम्मेलन में डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० जगदीश गुप्त आदि उस समय के युवा कवि भी सम्मिलित हुए थे। इस प्रकार मोदीजी तत्कालीन तथा भावी श्रेष्ठ साहित्यकारों के सम्पर्क में आए।

मोदीजी ने सन् 1950 में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। निजी साहित्यिक अभिरुचि और पारिवारिक व्यापार-बुद्धि का सम्मिश्रण, उनके द्वारा चयनित प्रकाशन-व्यवसाय में फलीभूत हुआ। लेखकों से सम्पर्क साधा। प्रकाशन-काल के आरम्भिक वर्षों में ही उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली। सन् 1956 में उन्होंने शिवानी का प्रथम उपन्यास 'चौदह फेरे' प्रकाशित किया। इसके बाद उन्होंने दो कहानी संग्रह प्रकाशित किए। एक माखनलाल चतुर्वेदी का 'कला का अनुवाद' और दूसरा शिवानी का 'लाल हवेली'। इनके साथ-साथ उन्होंने अनंतगोपाल शेवड़े का उपन्यास, 'मंगला', सद्गुरुशरण अवस्थी का नाटक 'मुद्रिका', कपिलदेव द्विवेदी का व्याकरण 'रचनानुवादकौमुदी' आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किए। उनका व्यवसाय फलने-फूलने लगा था।

उन दिनों गोरखपुर में मुद्रणसम्बन्धी सुविधाओं का अभाव था। कदाचित् अपने व्यवसाय को अधिक गति देने के लिए मोदीजी सन् 1964 में गोरखपुर से काशी चले आए। महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज, पं० बलदेव उपाध्याय, ठाकुर जयदेव सिंह, डॉ० मोतीचंद, डॉ० भगीरथ मिश्र जैसे ख्यातिलब्ध लेखकों के ग्रन्थों का प्रकाशन किया। 'काशी का इतिहास', 'काशी की पांडित्य परम्परा', 'मनीषी की लोकयात्रा' जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थ विश्वविद्यालय प्रकाशन से प्रकाशित हुए। इस प्रकार मोदीजी ने भारतीय प्रकाशन के इतिहास में अपना नाम सुरक्षित कर लिया। अपनी प्रकाशन-क्षमता के बल पर वे अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के लगातार दो बार महामंत्री भी बने।

मोदीजी के रूप में एक सुशिक्षित सुरुचि-सम्पन्न व्यवसायी ने प्रकाशन-व्यवसाय में पदार्पण किया था। उस युग में अधिकतर हिन्दी के प्रकाशकों का मुख्य उद्देश्य कागज काला भर करना होता था। पुस्तकों में भूलों-त्रुटियों की भरमार रहती थी। एक प्रमुख प्रकाशक कहा करते थे कि हमारे पाठक इतने शिक्षित हैं कि वे गलतियाँ सुधार कर पढ़ लेते हैं। मोदीजी ने अपने हर प्रकाशन का प्रूफ स्वयं जाँचा। भूलों का परिमार्जन भी किया और आवश्यक संशोधन और परिवर्तन भी किए। इस दृष्टि से हम उन्हें पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी का सच्चा उत्तराधिकारी कह सकते हैं। द्विवेदीजी ने मुख्यत: 'सरस्वती' में आई स्फुट रचनाओं का संशोधन किया तो मोदीजी ने सहस्त्रों ग्रन्थों की भाषा-शुद्धि की। लेखक और सम्पादक के रूप में भी मोदीजी ने प्रतिष्ठा प्राप्त की है। 'भारतीय वाङ्मय' में उनकी छपी टिप्पणियों तथा प्रसादजी सम्बन्धी उनके संस्मरणों ने प्रबुद्ध साहित्य-सेवियों का ध्यान आकृष्ट किया है।

मोदीजी काशी की अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े थे। हिन्दू सेवा सदन, मारवाड़ी अस्पताल, काशी गौशाला, मुमुक्षु भवन जैसी संस्थाओं को उन्होंने नवजीवन तो प्रदान किया ही, उन्हें विराट् रूप देते हुए साधन-सम्पन्न भी बनाया। वे वैयक्तिक जीवन में भी आदर्श का पालन करने वाले थे। जब उनकी माताजी का देहान्त हुआ तो घर में ढेरों मेहमान आए थे। गैस की उन दिनों किल्लत थी। उनकी पत्नी ने अपने कर्मचारी के द्वारा पाँच रुपए अतिरिक्त देकर किसी प्रकार एक सिलिंडर मँगवाया। मोदीजी को पता चला कि बिना बारी का सिलिंडर लिया गया है तो उन्होंने अपने उसी कर्मचारी के द्वारा दुकानदार को सिलिंडर वापस भिजवाया और पत्नी से कहा कि किसी की बारी का सिलिंडर हमें नहीं लेना चाहिए। हो सकता है कि उसे उसकी और भी अधिक आवश्यकता हो। पिछले दस वर्षों से शारीरिक व्याधियों ने उन्हें आक्रांत कर रखा था, परन्तु उनकी सक्रियता और कर्मठता किसी सीमा तक बनी रही। सभी मित्रों से उन्होंने सम्पर्क बनाए रखा। उनका निधन मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। अभी तीन सप्ताह पहले 'शब्दलोक' में अपनी उपस्थिति से उन्होंने मुझे आश्चर्यचकित किया था। मुझे गले लगाकर बधाई देते हुए कहा था—"अभी पचहत्तर अंक प्राप्त किए हैं, पूरे सौ अंक प्राप्त करना है।" काश! वे स्वयं भी सौ अंक प्राप्त करते और अपने मित्रों तथा स्नेहियों को यथावत् उपकृत भी करते रहते। पुण्यात्मा मोदीजी मेरा शतश: नमन।

शोक पत्र

आदरणीय श्री मोदीजी के स्वर्गवास का समाचार जानकर मुझे बहुत ही दु:ख हुआ। श्री मोदीजी से मेरा बहुत पुराना सम्पर्क रहा। वे हम सब से बड़ा स्नेह रखते थे। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और स्वजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति दें।

—नन्दकिशोर अग्रवाल
बिरला बिल्डिंग, 9/1, आर०एन० मुखर्जी रोड, कोलकाता

I am shocked and grieved to learn of the sad demise of respected Shri Purushottamdasji Modi.

—Ramavatar Makharia
Birla Building, Kolkata

मोदीजी से कुछ दिनों पूर्व हुई बातचीत के प्रमुख अंश

पुस्तकें हमेशा रहेंगी : मोदी

■ वार्ताकार : डॉ० सुनीता सिंह

लेखक की रचना का सहयात्री होता है प्रकाशक, लेकिन अब वह बात नहीं आती, लेखक ने जो लिख दिया, उसे स्वीकार कर लिया और छाप दिया। आपका क्या विचार है?

देखिये ऐसा है कि बहुत से लेखक प्रकाशक से सहमति माँगते हैं और अपनी पांडुलिपि में संशोधन भी करा देते हैं क्योंकि प्रकाशक के सामने बाजार होता है, पाठक होते हैं। साहित्यिक रचनाओं में इसकी अपेक्षा नहीं होती। वाराणसी में अधिकतर पाठ्य पुस्तकों का ही प्रकाशन होता है। साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन बहुत कम होता है। साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य दिल्ली में ही होता है, क्योंकि वहाँ प्रचार-प्रसार की सुविधा है। पहले समाचारपत्रों में पुस्तकों की समीक्षाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती थीं, जिससे पाठकों को पुस्तकों की जानकारी होती थी, किन्तु अब स्थिति कुछ और ही है।

एक जमाने में स्वतन्त्र लेखकों का अस्तित्व रहता था, लेकिन अब वह जमाना नहीं रहा। अब अच्छे पदों पर बैठे लेखकों की पुस्तकें चुटकियों में छाप दी जाती हैं। उन्हें न रायल्टी चाहिये, न एडवांस। क्या यह लेखक से मुक्त होने का रास्ता नहीं है?

आज बहुत से अधिकारी लेखक ऐसे पदों पर हैं, जिनके नाम से अथवा जिनकी रचना प्रकाशित करने पर, अधिक से अधिक पुस्तकें खरीद ली जाएँगी। प्रकाशक उसे छापने में अवश्य ही अधिक रुचि लेंगे।

विषय की विविधता में आपकी पुस्तकें विशिष्ट जान पड़ती हैं। पुस्तकों के चुनाव में आपकी कौन-सी दृष्टि काम करती है?

पुस्तकों का चुनाव करते समय यह दृष्टि रखनी पड़ती है कि यह पुस्तक कहाँ बिकेगी और इसके पाठक कहाँ हैं। आध्यात्मिक पुस्तकों के अच्छे पाठक हैं। हमने पं० गोपीनाथ कविराज की पुस्तकें प्रकाशित कीं। उनकी पुस्तकों की अच्छी माँग रहती है। उनके अतिरिक्त विषयगत पुस्तकें, जो छात्रोपयोगी होती हैं, उनका ही प्रकाशन करना हम पसन्द करते हैं। जनरल पुस्तकें बिकती नहीं, प्रयासपूर्वक बेचनी पड़ती हैं।

क्या आप मानते हैं कि हिन्दी प्रकाशन का बाजार सफल नहीं है?

हाँ, पुस्तक आज उपभोक्ता सामग्री नहीं है। प्रत्येक शहर में बड़े-बड़े मॉल (शोरूम) खुल रहे हैं, किन्तु उनकी तुलना में पुस्तकों की दुकानें कहाँ खुल रही हैं? या जो हैं उनका विकास कहाँ हो रहा है। यह सच है कि हिन्दी प्रकाशन का जितना विकास होना चाहिये उतना नहीं हो रहा है।

आपके सामने क्या नयी तरह की व्यावसायिक चुनौती हो सकती है?

सभी व्यवसायों में आज नयी-नयी चुनौतियाँ आ रही हैं। प्रकाशन व्यवसाय के सामने भी बड़ी चुनौतियाँ हैं। बहुत से अंग्रेजी के प्रकाशक भी हिन्दी-प्रकाशन के क्षेत्र में आ रहे हैं और अपने सम्पन्न साधनों से इस हिन्दी क्षेत्र में छा जाना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होगा कि साहित्यिक दृष्टि से हिन्दी में विकृति आती जायेगी और व्यावसायिकता बढ़ती जायेगी।

प्रकाशक और लेखक के बीच एक अंतरंग और संवेदनशील रिश्ता होता है। इस रिश्ते का आधार आपसी विश्वास ही है। अक्सर देखा गया है कि प्रकाशक को ही कटघरे में खड़ा किया जाता है। बात अक्सर पुस्तक में रह गयी प्रूफ की गलतियाँ, निम्न स्तर की छपाई या फिर ठीक प्रचार-प्रसार न किये जाने से बढ़ती हुई रायल्टी के लेन-देन पर आकर विस्फोटक हो जाती है?

लेखक और प्रकाशक के विषय में यशपाल जी ने कहा था कि ''मैं लेखक हूँ, मेरी पत्नी प्रकाशवती प्रकाशक हैं।'' लेखक प्रकाशक को बनाता है। प्रकाशक भी लेखक को बनाता है। दोनों के संयुक्त सहयोग से ही लेखन-प्रकाशन चलता है। यह भौतिकता का युग है। कभी-कभी लेखक प्रकाशक के बीच में मतभेद हो जाता है। इसके पीछे अनेक कारण होते हैं। कोई प्रकाशक अच्छे लेखक को असन्तुष्ट नहीं करता और न लेखक ही प्रकाशक को छोड़ना चाहता है। आज लेखक चाहता है कि उसकी रचना का प्रकाशन बहुत सुन्दर और आकर्षक हो और अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचे।

पुस्तक उद्योग की पब्लिसिटी पर आप कितना खर्च करते हैं?

प्रत्येक पुस्तक एक इकाई है। प्रत्येक पुस्तक के लिए विज्ञापन देना या प्रचार करना आर्थिक दृष्टि से सम्भव नहीं है। हम सूचीपत्रों और संस्थान के मासिक बुलेटिन के द्वारा पुस्तकों का प्रचार करते हैं, जिस पर हमारे सम्पूर्ण वार्षिक बिक्री का 15 से 20 प्रतिशत तक खर्च होता है।

क्या सम्पादक रखने की परम्परा आपके यहाँ नहीं है?

सम्पादक रखना चाहते हैं किन्तु पुस्तक प्रकाशन की जानकारी के लोग नहीं मिलते। पहले मैं स्वयं सम्पादन करता था किन्तु काम इतना बढ़ गया है कि अब सम्भव नहीं होता। पुस्तक प्रकाशन और सम्पादन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। तभी प्रकाशन उद्योग का विकास होगा। किसी भी यूनिवर्सिटी में यह पाठ्यक्रम नहीं है।

वर्तमान में प्रकाशन के सम्मुख क्या कठिनाइयाँ हैं?

प्रचार, प्रसार और वितरण यही सबसे बड़ी कठिनाई है।

सरकारी थोक खरीद की प्रक्रिया क्या काफी जटिल बतायी जाती है?

(शेष पृष्ठ 20 पर)

हमारे दादाजी!

■ महिमा मोदी (कक्कू)

दादाजी अपने एक पौत्र—सिद्धार्थ व पाँच पौत्रियों—ऋचा, श्रुति, महिमा (मैं), श्रेया और प्रियेशा को बिना भेदभाव किए, लाख व्यस्तताओं के बावजूद बहुत ही अधिक स्नेह-प्यार देते थे। दादाजी विद्या-व्यसनी थे। वे हमेशा पुस्तकों की दुनिया में खोए रहते थे। पुस्तकों में तो उनके प्राण बसते थे, फिर भी हम सभी पौत्र-पौत्रियों को प्यार व समय देने में अपनी व्यस्तताओं का बहाना नहीं थोपते थे। तनावपूर्ण व्यस्तताओं के बीच भी हम सभी को ऐसे दुलारते थे कि जी हल्का हो जाता था।

दादाजी हमारे अभिभावक तो थे ही, शिक्षक व आदर्श भी थे। अपने रोचक संस्मरणों के माध्यम से हमें चैतन्य व सक्रिय रहने की अद्‌भुत शिक्षा यूँ ही दे डालते थे। उन्होंने हमें सदैव राष्ट्र, समाज व परिवार के प्रति नैतिकता और व्यवहारकुशलता की सीख दी। उनके दिए हुए संस्कारों ने ही हम सभी में संवेदना जगायी। हमारा परिवार उनके आदर्शों का अनुसरण करते रहने हेतु संकल्पित है। उनकी सादर स्मृति हमारे हृदय में हमेशा अमर रहेगी। उनका धरती से उठ जाना हमलोगों के लिए असह्य वेदना है।

समवेदना के पत्र

संताप गहरा रहा। आदरणीय पुरुषोत्तमदासजी हिन्दी के बरगद थे। ऐसे उद्‌भट हिन्दीसेवी विद्वान का हमारे बीच से जाना हिन्दी भाषा और उसकी सर्जना की अपूरणीय क्षति है। बुर्जुगों का साया हम पर आशीष का छतनार हाथ है जो काया के भस्मीभूत होने के बावजूद हम पर छाँह दिए तना ही रहता है। धैर्य धरें। उनकी सीखों की उँगली परिवारजनों से कभी न छूटे, यही शुभकामना है।

—चित्रा मुद्‌गल, दिल्ली

मोदीजी के निधन का समाचार मिला। उससे मन को बहुत आघात पहुँचा। इसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता था। अभी पिछले 28 अगस्त को आवास पर उनसे मिला था। बहुत प्रसन्न, प्रफुल्लित और उत्साही मुद्रा में लगभग एक बजे दिन में अपनी टेबल पर काम करते हुए मिले थे। लगभग एक घंटे तक खूब जमकर साहित्य-चर्चा हुई थी। मेरे साथ उन्होंने चाय-पान किया था, मैं बार-बार आग्रह करता रहा कि आप के विश्रामकाल में बाधा होगी परन्तु ऐसा लगता था कि जैसे उनके लिए विश्राम नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। फिर यह अनन्त विश्राम अकस्मात कैसे आ गया? कहाँ से आ गया? गजब विधाता की लीला है। अब इस आघात को सहना ही है। उनका आदर्श हम लोगों के सामने रहेगा। उनके पुत्र सुयोग्य उत्तराधिकारी हैं। उनके साथ कार्य करके सध गये हैं। ईश्वर उन्हें शक्ति दे कि पिता के द्वारा स्थापित, संचालित, विश्वविद्यालय प्रकाशन और अपने परिवार को पूरी क्षमता के साथ सम्भाल लें।

—डॉ० विवेकी राय, गाजीपुर

मोदीजी से दो-एक बार की भेंट का ही मेरे मन पर स्थायी प्रभाव है। स्वर्गीय मोदीजी के लिए प्रकाशन केवल व्यवसाय नहीं था। उन्होंने हिन्दी प्रकाशन को उच्चतम स्तर तक पहुँचाने को मिशन बना रखा था। एक प्रकाशक के तौर पर मोदीजी की भूमिका न केवल श्रेष्ठ पुस्तकों को प्रकाशित करने की थी बल्कि व्यापक महत्त्व के प्रश्नों को रेखांकित करने की रही। 'भारतीय वाङ्मय' के लिए लिखी जानेवाली सम्पादकीय टिप्पणियों में वे सदा ही महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को रेखांकित करते थे। उनके संस्मरण भी हिन्दी साहित्य और काशी की परम्पराओं में अक्सर अंतर्दृष्टि प्रदान करते थे। 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका प्राप्त होते ही मैं मोदीजी के लिखे हुए लेख और टिप्पणी जरूर पढ़ता था। उनका जाना हम सब हिन्दी लेखकों और पाठकों के लिए गहरा धक्का है।

—प्रो० पुरुषोत्तम अग्रवाल
संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली

श्री पुरुषोत्तमदासजी मोदी के निधन का समाचार स्तब्धकारी है। समझ नहीं पा रहा कि कैसे क्या हुआ। कुछ माह पूर्व उनसे पत्राचार हुआ था। वाराणसी में चौकवाली दुकान पर उनसे आत्मीय भेंट की स्मृति कई वर्ष बाद आज भी सुरक्षित है। वे उदारतापूर्वक पुस्तकें भिजवाते थे और प्राय: हमेशा ही कहते थे कि अपनी रुचि की किताबें उन्हें लिखकर मँगवा लूँ। यह मेरी व्यक्तिगत क्षति भी है। दिवंगत आत्मा की शान्ति के साथ यह भी कामना है कि परिवार इस दु:ख को धैर्य से सहन करे।

—मधुरेश, बरेली (उ०प्र०)

18 दिन बाद जब मुंबई से लौटा तो यह दु:खद समाचार मिला। मैं तो स्तब्ध हो उठा। एकाएक यह क्या हो गया? अभी तो वे पूरी ऊर्जा के साथ प्रकाशन और साहित्य जगत में उपस्थित थे। उनके साथ बीता हुआ एक लम्बा समय इस समय मुझे उनसे भर रहा है। वे सदा हमारी यादों में जीवित रहेंगे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति और परिजनों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति दे।

—डॉ० रामदरश मिश्र, नई दिल्ली

आदरणीय पुरुषोत्तमदास मोदीजी के आकस्मिक निधन की सूचना मिली तो सहसा विश्वास नहीं हुआ। लेकिन मृत्यु तो प्रकृति का अन्तर्निरोध है, हमें स्वीकार करना ही होगा। जैसा कि गेटे ने कहा था—'जीवन का वृक्ष हमेशा हरा रहता है' मानना पड़ेगा। वे मेरे आत्मीय थे। उनके बिछुड़ने से हम सब दु:खी हैं। लेकिन विश्वविद्यालय प्रकाशन उनका जीवित स्मारक है।

—भारत भारद्वाज, दिल्ली

आदरणीय मोदीजी के निधन का समाचार मिला। मैं बनारस में होता तो अवश्य श्राद्ध-कर्म के अवसर पर उपस्थित होता। यहाँ से तो सिर्फ अपनी शोक-संवेदना भेज सकता हूँ। मेरी कामना है कि उनके पुत्र इस योग्य हों कि मोदीजी की विरासत को संभाल सकें और उनके काम को आगे ले जाएँ। **—डॉ० नंदकिशोर नवल,** पटना

आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी के अप्रत्याशित निधन का समाचार पाकर गहरा आघात लगा। डेढ़ माह पूर्व ही वाराणसी में मैंने सपत्नीक उनके दर्शन किये थे और एक-डेढ़ घंटे चर्चा हुई। वे पूर्णत: सक्रिय थे। यह अकल्पनीय ही है कि मेरा उनका अन्तिम दर्शन था। उनके जैसा साहित्यप्रेमी उदार अग्रज दुर्लभ है। परमेश्वर उन्हें परम शान्ति दे। **—राधावल्लभ त्रिपाठी,** सागर

आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के निधन का समाचार प्राप्त कर आंतरिक पीड़ा हुई। जीवन के इस मोड़ पर जिन कतिपय साहित्यिक बंधुओं से परिचय प्राप्त कर, मैं अपने को भाग्यशाली समझ रहा था, उनमें श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी भी थे। उन्होंने मेरे जैसे कितने ही लेखकों को सराहना दी और लिखने के लिए प्रेरणा प्रदान की। उनके स्नेह को भुलाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। मोदीजी का निधन हिन्दी-जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है।

—राजेन्द्र केडिया, कोलकाता

पुरुषोत्तमदास मोदीजी के आकस्मिक निधन का समाचार जान कर अत्यन्त दु:ख हुआ। कुछ ही दिन पूर्व टेलीफोन पर मेरी उनसे बात हुई थी तब उन्होंने कहा था कि ''अब मेरा स्वास्थ्य ठीक है।'' अब अचानक यह अप्रत्याशित घटना घट गई। जीवन की क्षणभंगुरता का भान ऐसी ही घटनाओं से होता है—''अब भंगुर जीवन की कलिका कल प्रात: को जाने खिली न खिली''। जगत की तो यह अपूर्णीय क्षति है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य लेखकों से तो उनका व्यक्तिगत सम्पर्क रहा, उनसे सम्बन्धित संस्मरण 'भारतीय वाङ्मय' में प्रकाशित होते रहते थे। हाल ही में 'भारतीय वाङ्मय' के अक्टूबर अंक में 'भारतीय आस्था के प्रतीक राम सेतु' लेख प्रकाशित हुआ। हिन्दू आस्थाओं पर आसुरी शक्तियों द्वारा किये जा रहे प्रहारों के विरोध में श्री मोदीजी ने निर्भीक होकर अपना पक्ष रखा, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

—केशवप्रसाद कायाँ, गौरीशंकर कायाँ
कोलकाता

मोदीजी के निधन का दुखद समाचार मिला। उनसे मेरा लम्बा साहचर्य रहा है। उन्होंने मेरी आरम्भिक कई पुस्तकों का प्रकाशन किया। उन दिनों मैं उनके भैरवनाथवाले मकान पर ही रुकता था। मोदीजी की उन दिनों की स्मृति इस समय दु:खी कर रही है। मृत्यु एक ऐसी सच्चाई है जो कभी किसी को सुख नहीं देती फिर भी उसे सबको स्वीकार करना पड़ता है। मोदीजी ने बहुत संघर्ष किया है और बहुत काम किया है। मैं गोरखपुर से वाराणसी तक के उनके सीढ़ी-दर-सीढ़ी विकास का साक्षी हूँ। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मोदीजी की आत्मा को शान्ति दे।

—प्रो० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, गोरखपुर

सम्माननीय पारसनाथजी से आदरणीय मोदीजी के महाप्रयाण की सूचना पाकर मर्माहत हुआ हूँ। बाबा विश्वनाथ की इच्छा के समक्ष

नतमस्तक हूँ। उनके चले जाने से प्रकाशनसंसार की अपूरणीय क्षति हुई है, साथ ही सम्पादन-जगत् का एक स्तम्भ ही धराशायी हो गया। मैंने तो अपना एक सच्चा प्रशंसक खो दिया है। किन्तु कर्मठ और पुरुषार्थी पुत्रों के रहते उनकी मृत्यु शोचनीय नहीं है। अपने यशस्वी पिता की कीर्ति-पताका को बराबर ऊँचा उठाये रहें, यही एक योग्य दिवंगत पिता के प्रति योग्य पुत्रों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। **—डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव,** पटना

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी के आकस्मिक वियोग से मर्माहत हुआ। वे वाराणसी नगर की बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक सम्पदा थे। विलक्षण बात यह है कि व्याधिग्रस्त रहते हुए भी उन्होंने कभी न आलस्य किया और न विश्राम। ऐसा अदम्य साहस और दृढ़ विश्वास ऐसी आयु के व्यक्ति में दुर्लभ है। काशी नगर के प्रति उनमें अपार सम्मान भाव था। डॉ० बदरीनाथ कूपर के जन्मदिवस पर मेरी अन्तिम मुलाकात हुई थी। वे उस दिन हास-परिहास का आनन्द लेते रहे।

—धर्मशील चतुर्वेदी, वाराणसी

प्रकाशन-जगत के ज्योतिपुंज, सुविख्यात साहित्य-मर्मज्ञ एवं समाजसेवक पुरुषोत्तमदास मोदीजी को मेरा पूरा परिवार भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। **—भगवन्ती सिंह**

पत्नी—स्वर्गीय ***डॉ० शुकदेव सिंह,*** वाराणसी

पुरुषोत्तमदास मोदीजी पर कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' की यह उक्ति चरितार्थ होती है—

बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है।
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है॥

मोदीजी अंत तक सक्रिय रहे। उन्होंने कर्मयोगी के रूप में जीवन व्यतीत किया। उम्र और बीमारी उन पर हावी न हो सकी। वे अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी थे। स्वाभिमान उनमें कूट-कूटकर भरा था। वे स्पष्ट वक्ता तथा संवेदनशील थे। माखनलालजी उनके प्रेरणास्रोत थे। प्रसादजी के प्रति भी उनकी गहरी आस्था थी। उनके द्वारा सम्पादित 'भारतीय वाङ्मय' अब उनकी लेखनी से वंचित हो गया।

बहुत शौक से सुन रहा था जमाना,
तुम्हीं सो गये दास्ताँ कहते-कहते।

उनका अभाव सदा सालता रहेगा। उनकी पुण्य स्मृति को बारम्बार प्रणाम।

—गौरीशंकर गुप्त, वाराणसी

आदरणीय मोदीजी के काशीलाभ से हिन्दी प्रकाशन-जगत का एक सुदृढ़ स्तम्भ ध्वस्त हो गया। वे प्रकाशक होने के साथ ही हिन्दी साहित्य के अच्छे ज्ञाता और लेखक थे। आशा है, उनके पुत्र-द्वय उनकी शानदार परम्परा को उज्ज्वलतर बनायेंगे और हिन्दी प्रकाशन को केवल दिल्ली के दायरे में सिमट जाने से बचायेंगे।

—डॉ० कुमार विमल, पटना

आदरणीय मोदीजी अब हमारे बीच नहीं रहे। स्तब्ध मन आज भी इस समाचार पर विश्वास करने को तैयार नहीं है..... किन्तु शाश्वत सत्य को स्वीकार करना भी विवशता है। श्रद्धेय दादा मोदीजी अपने अतुलनीय स्नेह एवं सहयोग भावना के अद्वितीय उदाहरण के रूप में सदैव हमारी स्मृतियों में रहेंगे। परम शोक के इन कठिन पलों में मैं मोदी-परिवार एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन परिवार के शोक में सहभागी हूँ।

—डॉ० सुश्री शरद सिंह, सागर (मध्यप्रदेश)

हृदयविदारक दु:संवाद मिला कि मान्यवर पुरुषोत्तमदासजी नहीं रहे। मैं हतप्रभ हो गया। कुछ दिनों पूर्व मैंने उन्हें फोन किया था पर बात नहीं हो सकी। गत बीस वर्षों से मेरा उनसे पारिवारिक आत्मीय सम्बन्ध था और उन्होंने सदैव मेरे निवेदन को स्वीकार किया। आज वे नहीं हैं पर उनकी पावन स्मृति सदैव अक्षुण्ण रहेगी। मुझे विश्वास है कि उनके पुत्र-द्वय से भी वैसा ही आत्मीय सम्बन्ध बना रहेगा। **—डॉ०कल्याणमल लोढ़ा,** जयपुर

आदरणीय मोदीजी जैसा निष्ठावान, लगनशील, दृढ़ निश्चयी इन्सान विरल ही मिलते हैं। इतनी उम्र होने के बावजूद उनकी कर्मठता और अनुशासित दिनचर्या हम सभी के लिए प्रेरणास्पद रही है। ऐसे आदर्शवान व्यक्ति की छत्रछाया बड़े सौभाग्य से मिलती है। हम युवापीढ़ी को ऐसे बुजुर्गों से बहुत कुछ सीखने और कर्म करने की प्रेरणा मिली है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। हम ऐसे सत्पुरुष को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। **—डॉ० कुसुम राय**

वर्द्धवान (पश्चिम बंगाल)

यश-लिप्सा से कोसों दूर, एकनिष्ठ अध्यवसायी, अनवरत साधक, अथक परिश्रमी पुरुषोत्तमदास मोदी साहब, साहित्य के प्रकाशन-संसार के साथ ही अपने शताधिक चहेतों को छोड़ चिर निद्रा में विलीन हो गए। वे बेहद व्यवहारकुशल इन्सान थे। मृदु मुस्कान से आप्लावित उनकी सरल-सीधी मधुर वाणी किसी को भी बरबस मोह लेनेवाली थी। मोदीजी को उच्च स्तरीय साहित्य की बड़ी अच्छी परख थी। बड़े-बड़े साहित्यकार, मनीषी और चिन्तक उनकी इस प्रतिभा के कायल थे। विष्णुकान्त शास्त्री, प्रख्यात आलोचक डॉ० रामचन्द्र तिवारी, 'कल्याण' के सम्पादक राधेश्याम खेमका, यशस्वी कथाकार डॉ० विवेकी राय, प्रो० बच्चन सिंह तथा श्री हृदयनारायण दीक्षित जैसे अनेक ख्यातिलब्ध लोगों के साथ उनकी खासी अन्तरंगता रही। अपनी युवावस्था में वे पंत तथा महादेवी जैसे साहित्यमनीषियों के भी निकट सम्पर्क में रहे। शायद यही कारण था कि उन्होंने 'विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी' के माध्यम से, अपने उच्चकोटि के प्रकाशन की मशाल को बखूबी जलाए रखा।

वे न केवल उच्चकोटि के पारखी प्रकाशक, बल्कि श्रेष्ठ लेखक एवं अत्यन्त कुशल पत्रकार भी थे। विगत कुछ वर्षों से प्रकाशित 'भारतीय वाङ्मय' की दिन-ब-दिन बढ़ती लोकप्रियता, उनकी कुशल सम्पादन-क्षमता को उजागर करनेवाली रही है। हमें नहीं लगता, पुरुषोत्तम जैसे उत्तम व्यक्तित्व की क्षतिपूर्ति निकट भविष्य में हो सकेगी। निश्चय ही हमने हिन्दी-जगत के प्रकाशन की अमूल्य निधि को खो दिया है।

—रामबदन राय, गाजीपुर

I am sad and stricken with grief the honourable Shri Modiji has departed to Kailashdham so soon. I am unfortunate that I could not meet him although desiring it so strongly all the time. May Lord Shiva and Adishakti Maha Maya bless his soul to rest in peace.

—Prabhudayal Mishra, Bhopal

स्व० मोदीजी सिर्फ व्यवसायी नहीं थे। वे विद्वान, सम्पादक, लेखक, विचारक, समाजसेवी, हिन्दी के विनम्र प्रचारक व अपने सुप्रतिष्ठित प्रकाशन-व्यवसाय से गोरखपुर व वाराणसी की प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि करनेवाले महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। हिन्दी के प्रति उनका अवदान बहुमूल्य है। उनके उदार सहयोग से ही हम अपने गुरु पूज्य डॉ० रामचन्द्र तिवारी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर केन्द्रित ग्रन्थ का प्रकाशन कर सके थे। उनका मुझे स्नेह प्राप्त था। मैं विनम्रता व आदर के साथ उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूँ।

—डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय, गोरखपुर

यह कैसी विडम्बना है कि हिन्दी-जगत के समाचारों के लिए हमें अंग्रेजी समाचारपत्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। यहाँ 'PIONEER' में आदरणीय मोदीजी के देहान्त का समाचार पढ़कर हतप्रभ रह गया। किसी हिन्दी समाचारपत्र में यह समाचार नहीं मिला। मोदीजी से मैं कभी नहीं मिला, पर उनके पहले पत्र से ही पता चल गया कि वे मुझे अरसे से जानते थे, मेरे मित्र (अब स्व०) विश्वनाथ मुखर्जी के माध्यम से। उन्होंने बनारस आने पर मिलने के लिए भी लिखा था, पर यह सम्भव नहीं

हो सका। 'भारतीय वाङ्मय' साहित्यिक पत्रकारिता में उनकी अपनी पहचान है। उन्होंने मेरे प्रत्येक पत्र का उत्तर दिया, यह बहुत कम लोग करते हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—महेन्द्र राजा जैन, इलाहाबाद

श्री मोदीजी के निधन का समाचार पाकर हार्दिक दु:ख हुआ। मेरा उनसे आत्मीय सम्बन्ध रहा है। कभी-कभी पत्राचार होता था। उसमें उनका आन्तरिक स्नेह झलकता था। 'भारतीय वाङ्मय' का सम्पादन जिस कुशलता से करते थे उससे उनकी साहित्य की परख और पैठ दोनों स्पष्ट झलकती थी। आज के बदलते युग में पुराने मानवीय जीवन-मूल्यों के प्रतीक थे। उनके पुत्रों ने उनके अनेक गुण विरासत में पाए हैं। उनके द्वारा स्थापित आदर्शों और परम्पराओं को वे पूरी तरह निभाएँगे, मुझे विश्वास है।

—विश्वनाथ, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

कल्पना तक नहीं थी कि इस तरह एकाएक वे विदा हो जायेंगे। मैं उनसे तभी से परिचित था जब वे काशी में बसे और प्रकाशन की दिशा में प्रगति के पथ पर दौड़धूप कर रहे थे। उन्हीं की कर्मठता, लगन और सहित्यानुराग का परिणाम है कि प्रकाशन और साहित्यप्राप्ति के प्रतिष्ठान के रूप में विश्वविद्यालय प्रकाशन सुविख्यात है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि उनके पुत्रद्वय इस दिशा में खूब प्रगति करें। बेटों की लगन और प्रगति से उनकी आत्मा को आनन्द ही होगा।

—जमनालाल जैन, वाराणसी

आज ही दु:खद समाचार मिला। कई दशक पुराने सम्बन्ध थे। वाराणसी जाने पर उनसे जरूर मिलता था। परमपिता से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—कैलाशचन्द्र भाटिया, अलीगढ़

यह तय करना कठिन था कि उनमें साहित्य प्रेम और साहित्य-व्यवसाय में कौन ऊपर है? वे काशी की पुस्तकप्रेमी परम्परा के प्रतीक थे। उनसे जब-जब भेंट हुई उन्होंने साहित्य-लेखन तथा अच्छी पत्रिकाओं की चर्चा की। वे लेखकों का सम्मान करते थे। विनम्रता से मिलते थे। उनमें कुछ दुर्लभ मानवीय गुण थे। प्रसादजी पर लिखे उनके संस्मरणों ने गहरा स्पर्श किया है। बनारस ही नहीं हमारे साहित्यिक समाज की क्षति हुई है।

—कमला प्रसाद, भोपाल

बनारस से खबर मिली कि हमारे हितचिन्तक और मेरे परिवार के शुभचिन्तक मोदीजी नहीं रहे। मेरे लिए यह अशुभ समाचार हृदयविदारक-सा लगा। उनके जैसा व्यवहारकुशल व्यक्ति मुश्किल से मिलता है। मुझे कुछ कहते नहीं बनता।

—पारसनाथ सिंह, पटना

मोदीजी सच्चे इन्सान थे, परिश्रमी थे, प्रतिभावान थे। उन्हें पुन:पुन: प्रणाम है। कई वर्षों का मेरा साथ था। उनसे ऐसा अपना मन मिला था कि रिक्तता का मुझे खूब आभास होता है। उनकी कमी का एहसास प्रकाशन जगत और काशी को सदा होगा। उनके निधन को मैं अपनी निजी क्षति मानता हूँ। **—डॉ० रामअवतार पाण्डेय,** वाराणसी

यशस्वी साहित्यकार व प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदीजी के परागमन का समाचार मिलने पर मुझे हार्दिक क्लेश हुआ। मेरे ऊपर उनका अत्यधिक स्नेह था, जिसके लिए मैं उनका सदा कृतज्ञ रहूँगा। वाराणसी के मनीषी-जगत में उनकी अनुपस्थिति सर्वदा महसूस की जायेगी। वह पुण्यात्मा थे, इसलिए वे सर्वदा शान्ति में रहेंगे।

—विश्वनाथ पाण्डेय,
पी०आर०ओ०, बी०एच०यू०, वाराणसी

हम लोग जब कभी विश्वविद्यालय प्रकाशन जाया करते थे, बाबूजी प्रकाशन में एक जगह बैठे मिलते थे। एक युगपुरुष ने ज्ञान के प्रकाश को घर-घर पहुँचाया, उन्हें मेरा शत-शत नमन्। उनकी प्रेरणा मानवता की मशाल जलाये यही कामना।

—राजकुमार प्रजापति
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, एन.टी.पी.सी., रिहन्द

अप्रत्याशित रूप से इस प्रकार उनका जाना मर्माहत कर गया। हिन्दीप्रेमियों के लिए ही नहीं समस्त बुद्धिजीवी व्यक्तियों के लिए भी यह अपूरणीय क्षति है। अन्तिम समय तक साहित्य और पुस्तकों से उनका संवाद और आत्मीय सम्बन्ध बना रहा। उसके साक्षी हम सभी हैं।

—डॉ० अर्चना श्रीवास्तव, बलिया

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर अंक उपस्थित है। इसकी उपस्थिति में एक अनुपस्थिति दर्ज है। अभी पिछले महीने प्रसिद्ध संत-साहित्य-शोधक और गहन विद्वान प्रो० शुकदेव सिंह का आकस्मिक देहान्त साहित्यप्रेमियों को हतप्रभ और मर्माहत किये ही था कि प्रकाशक, सम्पादक और विचारक मोदीजी का निधन गहरा आघात दे गया।

—केशव शरण, वाराणसी

यह जानकर अत्यन्त दु:ख हुआ कि पूजनीय मोदीजी नहीं रहे। उन्होंने लेखन, प्रकाशन के क्षेत्र में जो योगदान दिया है उसके लिए हमेशा उन्हें याद किया जाता रहेगा। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन हिन्दी व संस्कृत की पुस्तकों के प्रकाशन और लेखन में व्यतीत कर दिया जिससे भारतीय संस्कृति का प्रचार हो सके। **—डॉ० आर्येन्दु द्विवेदी,** गोरखपुर

आदरणीय मोदीजी के असामयिक निधन के समाचार से मर्माहत हुआ। वे अन्त तक कर्मठ एवं क्रियाशील रहे। वे अपना कार्य पूरा कर चले गए। उनकी मृत्यु भाग्यवानों की थी। अलभ्य थी। 'जनमत भरत दुसह दु:ख होई'—मानस के कथन से इतर रही। यह उनके निष्कपट स्वभाव की देन थी। शुद्ध हृदय एवं कर्म में विश्वास, उनके जीवन का दर्शन अनुकरणीय है। इसका वे जीवित प्रमाण थे न कि वे केवल बातें करते रहे। गजब की स्मरणशक्ति एवं समाधान की क्षमता उनमें पाता था। मुझ पर था उनका अगाध स्नेह एवं वे थे पूर्वज भारतेन्दु के अनन्य भक्त। अद्भुत हिन्दीप्रेमी एवं सेवी। उनका निधन क्षति है सरस्वती के संसार में।

—गिरीशचन्द्र चौधरी, वाराणसी

आदरणीय मोदीजी के आकस्मिक निधन का समाचार अत्यन्त दुखदायी रहा। एकाएक कुछ घण्टों में सब कुछ हो गया और इतने प्रयास के बावजूद वे बचाए नहीं जा सके। वे स्वयं में साहित्यिक संस्था थे, प्रकाशन के पुरोधा व श्रेष्ठ रचनाकार थे। हिन्दी के उन अनन्य सेवक को साहित्य-जगत भुला नहीं पाएगा। **—किशन बुधिया,** मिरजापुर

श्री मोदीजी के निधन का दु:खद समाचार मिला। माता-पिता का रहना मनुष्य को मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखता है। लेकिन ईश्वर की इच्छा के आगे किसी की नहीं चलती। दु:ख के इस मौके पर मैं और मेरा परिवार मोदी-परिवार के साथ है। पूज्य मोदीजी की आत्मा को शान्ति मिले **—महेश भारद्वाज,** नई दिल्ली

बाबू पुरुषोत्तमदास मोदीजी के शिवसायुज्य का समाचार अखबारों से ज्ञात हुआ। श्री मोदीजी गोरखपुर से जब काशी पधारे थे तभी से उनका हमारे प्रेस से सम्पर्क रहा है। काशी के प्रकाशन जगत में जब से उन्होंने कदम रखा, बराबर आगे बढ़ते रहे। अनेक नवोदित लेखकों को उन्होंने उनकी पुस्तकों का प्रकाशन कर आगे बढ़ाया। काशी के अनेक समाजसेवी संगठनों से भी उनका जुड़ाव था। अपने समाज में भी वह कुशल नेतृत्व की क्षमता रखते थे। उनके असमय गोलोकवासी होने पर हमारे समाज को अपूर्णीय क्षति हुई।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दह्यति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः॥

—रमानाथ खण्डेलवाल, वाराणसी

(पृष्ठ 16 का शेष)

सरकार थोक भाव में पुस्तकें खरीदती हैं कि वह अपेक्षित पाठकों तक पुस्तकों को पहुँचायेगी, परन्तु पुस्तकें गोदामों में सड़ जाती हैं और पुस्तक खरीद की औपचारिकता पूरी कर ली जाती है।

पुस्तकों के बढ़ते मूल्य पर आपकी क्या राय है?

पुस्तकों के मूल्य बढ़ने का मूल कारण यह है कि सरकारी खरीद में बहुत अधिक कमीशन माँगा जाता है। भ्रष्टाचार भी है। पाठकों में पुस्तक खरीदने की प्रवृत्ति नहीं है। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने पाठकों की रुचि पुस्तकों के प्रति कम कर दी है। जो पुस्तकें पहले एक-दो हजार छपती थीं, अब कम छपती हैं। इसके कारण इनका मूल्य अधिक होता है। एक समय नेहरुजी से कहा गया कि सरकार पुस्तकों की खरीद के लिए टेंडर माँगती है। नेहरुजी इस पर बहुत नाराज हुए और कहा कि क्या पुस्तक जूते हैं जिस पर टेंडर माँगा जाता है।

आज विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों से प्रकाशक बड़े-बड़े पाठ्यक्रम के शास्त्रीय ग्रन्थों की कुंजी और गाइड के रूप में लिखवाने के या यों कहा जाए कि वृहद शास्त्रीय ज्ञान को छोड़कर शार्टकट रास्ते पर जाने (अध्ययन की) के प्रेरक बने हुए हैं। इसके पीछे कौन से कारण हो सकते हैं?

काशी में चार-चार विश्वविद्यालय हैं, किन्तु उनके एक प्रतिशत अध्यापक भी अपने विषय की नयी पुस्तकें देखने नहीं आते। उन्हें अच्छा खासा वेतन मिलता है। उसका 5 प्रतिशत भी पुस्तक पर खर्च नहीं करना चाहते। यह कहा जाता है कि किसी नगर की पुस्तकों की दुकान से उस नगर के बौद्धिक जगत का बोध होता है। काशी में प्राच्य विद्या की पुस्तकों के लिए विदेश से लोग आते हैं किन्तु इस नगर में इसमें कोई रुचि नहीं है। वैश्वीकरण निश्चित रूप से बौद्धिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति का ह्रास कर रहा है। मनुष्य जब घोर यांत्रिकता से ऊब जायेगा, शून्यता का अनुभव करेगा, अंतर्मुखी होगा तब वह पुस्तकों की शरण में जायेगा। पुस्तकें ही उसकी मार्गदर्शक होंगी और उसे संतुष्टि प्रदान करेंगी। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। आज आत्मिक विकास की पुस्तकों की बहुत अधिक माँग है, जैसे 'आपकी किस्मत आपके हाथ' लेखक टेरीसा चिउंग।

इस व्यवसाय में आपको क्या तुष्टि मिलती है? दुनिया के बहुत बड़े प्रकाशक हैं सर एलेन अन्वे। उनकी किताब है— 'प्रोफेशन फार जेंटलमैन' जिसमें यह कहा गया है कि यह बौद्धिक किस्म के लोगों का व्यवसाय है। इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

मुझको इस व्यवसाय में असीम संतुष्टि मिली है। बड़े से बड़ा अधिकारी, राज्यपाल, चीफ जस्टिस, कुलपति, कमिश्नर आदि सभी मेरे कार्यालय में आते हैं और सहज भाव से बौद्धिक चर्चा करते हैं। इससे जो मानसिक संतुष्टि होती है, वह भौतिक साधनों से सम्भव नहीं।

अपने 'भारतीय वाङ्मय' से आप पाठकों को कौन-सा संदेश देना चाहते हैं?

'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से हिन्दीत्तर क्षेत्रों में हिन्दी से सम्बन्धित जानकारियाँ, सूचनाएँ नयी पुस्तकों के बारे में बताने का प्रयास करते हैं क्योंकि उन तक हिन्दी क्षेत्र के समाचार नहीं पहुँच पाते।

प्रकाशन व्यवसाय का क्या भविष्य देखते हैं?

भविष्य अच्छा होगा। आज इंटरनेट पर भी पुस्तकें पढ़ी जा रही हैं और कागज में छपी पुस्तक भी पढ़ी जा रही हैं। दोनों ही तरह से पुस्तकों का लाभ है। इस तरह से हर युग में पुस्तकों का कुछ नया रूप उभर कर आयेगा। इसका खात्मा नहीं हो सकता।

रहे सदा साहित्यप्राण जो सत्य प्रकाशक, नहीं रहे,
धन्य और मूर्धन्य मनस्वी, भ्रान्तिविनाशक नहीं रहे।
सरल हृदय सहयोगी सर्जक, दिगायाम शुभ कीर्ति-सुनाम
उस पूतात्म सदा 'पुरुषोत्तम' मोदीजी को कोटि प्रणाम॥

अमलदार 'नीहार', बलिया (उ०प्र०)

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 **नवम्बर 2007** **अंक : 11**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)